January 2023 | Issue 43

Prabha प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

PRABHA KHAITAN FOUNDATION
अपनी भाषा अपने लोग

Growing Wings to Fly

B.R. Ambedkar had famously said, "I measure the progress of a community by the degree of progress which women have achieved." Indeed, can anything – art, music, literature, dance and human society – flourish without the precious contribution of women? In this issue of *Prabha*, we explore what it takes to empower women, and, in turn, humanity, through the lens of love, craft and unity

Pg 4-8

INSIDE

UPRIGHT JOURNALISM 10

LINGUISTIC HARMONY 16

ABOUT AMBEDKAR 20

SPECIAL CHRISTMAS 22

Prabha
प्रभा

PRABHA KHAITAN FOUNDATION
अपनी भाषा अपने लोग

INSIDE

RAJ KAPOOR'S MAGIC 9

REMEMBERING AN ARTIST 12

FAIR OR UNFAIR? 13

THE SWEETNESS OF FOLK 15

STORIES OF HEROES 19

THE SPIRIT OF CHRISTMAS 25

FORGING AHEAD 27

WOMEN UNDAUNTED 28

THE JOY OF GIVING 29

IMPORTANCE OF EDUCATION 30

MANISHA JAIN
Communications & Branding Chief,
Prabha Khaitan Foundation

The Sky's The Limit

As the former First Lady of the United States, Michelle Obama, said, "There is no limit to what we, as women, can accomplish." **Prabha Khaitan Foundation** has long endorsed this view; indeed, we need only look at our own grandmothers, mothers, aunts, sisters and other 'ordinary' women in our lives who accomplish extraordinary feats every day. In celebration of this spirit of womanhood, the Foundation is always moving towards helping women access the means to realise their true potential.

Thus, in the issue of *Prabha*, we take a look at how the Foundation has endeavoured to empower the underprivileged women of the Sikar and Churu districts of Rajasthan — by teaching them scaleable skills such as stitching, henna art and so on — and to bring joy and the spirit of healthy competition and excellence to the lives of young girls through dance. I hope you'll find the stories and the real testimonials of these women both heartwarming and inspiring.

Also important has been the goal to encourage stimulating conversations on various kinds of art, as well as to raise awareness regarding the importance of art in our society. Read on to discover more about such discussions with the likes of Shashi Tharoor, Rahul Rawail, Usha Bajaj Deshpande, Ratneshwar Kumar Singh and several others.

We must also remember that progress for society and especially for women relies on a stable, enriching education. This is why, along with our initiatives for empowerment and education, we take note of important days such as the International Day of Education, which is celebrated worldwide to affirm the need for accessible education.

We hope you enjoy reading this issue of *Prabha*. Don't forget to write to us with your suggestions and feedback at *newsletter@pkfoundation.org*!

Manisha Jain

Disclaimer: The views and opinions expressed in the articles are those of the authors. They do not reflect the opinions or views of the Foundation or its members.

SNAPSHOT OF THE MONTH

The child authors who participated in the Muskaan Literature Festival. You can read more about the festival in the next issue of *Prabha*

Happy Birthday

Prabha WISHES **EHSAAS** WOMEN BORN IN JANUARY

1st January

Dimple Trivedi

3rd January

Jyoti Kapoor

4th January

Mansi Malik

9th January

Rina Bhandari

19th January

Shruti Agarwal

23rd January

Shruti Mittal

24th January

Swati Agarwal

25th January

Shinjini Kulkarni

हमारी पहल — आधी दुनिया को मिले उनका पूरा आकाश

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात जहां स्त्रियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। यह श्लोक भारत भूमि पर स्त्री की सम्मानजनक स्थिति का प्रतिनिधि है। हम दुनिया की एकलौती ऐसी परम्परा हैं, जो ईश्वरीय सत्ता की परिकल्पना स्त्री रूप में भी करता है। वेद और भारतीय दर्शन ऐसे उद्धरणों से भरे पड़े हैं। हम हमारी धरती को भी मां के स्वरूप में देखते हैं। किसी अन्य सभ्यता में ऐसे विचार नहीं मिलते। वेद हमेशा से स्त्री की सक्षमता, समर्थता और उसके नेतृत्व के वाहक रहे हैं।

अपनी सभ्यता, संस्कृति, परम्परा में स्त्री को सर्वोच्च और *'नारी तू नारायणी!'* कहने वाले भारत की बौद्धिक परंपरा का अस्तित्व उसका दर्शन है, और भारतीय दर्शन का आधार उसकी आध्यात्मिक चेतना है। इसमें संशय नहीं कि हमारी आध्यात्मिक चेतना का मूल 'स्त्री शक्ति' पर केंद्रित है। हम जब ईश्वर के स्वरूप और उनके अंश को स्त्री और पुरुष रूपों में देखते हैं, तब पहली प्राथमिकता स्त्री रूप ही होती है– चाहे सीता–राम हों, राधा–कृष्ण हों, गौरी–गणेश हों या लक्ष्मी–नारायण!

हमारे वेदों में घोषा, गोधा, अपाला और लोपमुद्रा जैसी ऋषिकाएं हैं, तो गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियां भी, जिन्होंने वेदांत के शोध को दिशा दी। भारत की विदुषी स्त्रियों ने भक्ति आंदोलन से लेकर ज्ञान, दर्शन, समाज सुधार और परिवर्तन को हमेशा स्वर दिया है। इस कड़ी में राजस्थान की मीराबाई, दक्षिण की संत अक्का महादेवी जैसे नाम हर राज्य, क्षेत्र में दिखाई देते हैं। हमारे यहां ग्रामदेवी, कुलदेवी 'आस्था का केंद्र' होने के साथ ही राष्ट्र की उस नारी चेतना का भी प्रतीक हैं, जिसने सनातन काल से हमारे समाज का सृजन किया।

इसी स्त्री चेतना ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, और उसके बाद भी नारी सशक्तीकरण की लौ को जलाये रखा। हमारे वेद ग्रंथ स्त्री का आह्वान *'पुरन्धि: योषा'* मंत्र से करते हैं, जिसका अर्थ है कि स्त्रियां अपने नगर, समाज की ज़िम्मेदारी संभालने में समर्थ हों, अपने राष्ट्र को नेतृत्व दें। यह अकस्मात नहीं है कि *'कर्म ही जीवन है'* के मूलमंत्र को अपनाने वाली प्रख्यात नारीवादी, चिंतक, उद्यमी, परोपकारी, लेखिका डॉ प्रभा खेतान ने 70–80 के दशक में अपनी कलम से न केवल उस स्त्री चेतना को जाग्रत किया, बल्कि **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की स्थापना कर उन्हें सक्रिय रूप से सहायता दी, जो क्रम आज भी जारी है।

प्रभा के इस अंक की आवरण–कथा **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा महिला सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करने की उसकी विराट गतिविधियों के एक अंश की झलक भर है। फाउंडेशन कई वर्षों से राजस्थान के चूरू जिले में *महिला जागृति समिति* के साथ मिलकर ग्रामीण महिलाओं के लिए विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों की मेजबानी कर रहा है। सीकर जिले में *अभिव्यक्ति संस्था* के साथ भी कई प्रशिक्षण केंद्र भी संचालित हैं, तो अभिव्यक्ति के साथ ही लड़कियों के लिए नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन इसी पहल का एक हिस्सा है। आप हमारी पहल को जानें, उसके सहभागी बनें, और यह क्रम जारी रहे– यही कामना।

सीकर जिले में अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान का साथ

हर वर्ग की स्त्री के सशक्त होने का जो स्वप्न डॉ प्रभा खेतान ने अस्सी के दशक में देखा था, राजस्थान के सीकर जिले में *अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान* के साथ **प्रभा खेतान फाउंडेशन** उसे जमीनी स्तर पर साकार करने का काम कर रहा है।

महिला स्वावलंबन, सशक्तीकरण और स्वरोजगार के लक्ष्य से संचालित *'प्रभा खेतान प्रशिक्षण केंद्र'* में क्षेत्रीय महिलाओं को सिलाई, बुनाई, कढ़ाई आदि का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। उद्देश्य है कि प्रशिक्षित महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हों और सिलाई के तकनीकी गुर सीख कर स्वयं सहायता समूह के रूप में आगे बढ़ें।

अद्भुत है प्रभा खेतान शेखावाटी नृत्य शिरोमणि प्रतियोगिता

प्रभा खेतान फाउंडेशन की पहल *'सहयोग'* के तहत शेखावाटी अंचल के चूरू, सीकर और झुंझुनू की बालिकाओं के लिए *अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान* पिछले दो साल से *'प्रभा खेतान शेखावाटी नृत्य शिरोमणि प्रतियोगिता'* आयोजित कर रहा है।

इस प्रतियोगिता में प्रतिभा प्रदर्शन और इनाम के साथ ही बालिकाएं अतिथि और जज के रूप में उपस्थित राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों से मिलती हैं। पिछले दो सीजन में इस प्रतियोगिता के अतिथि के रूप में पद्मश्री से सम्मानित नृत्यांगना नलिनी और गुलाबो, राजस्थानी अभिनेता-निर्देशक क्षितिज कुमार, गायिका इला अरुण, कथक गुरु पंडित अशोक महाराज और नृत्यांगना नूतन सक्सेना शिरकत कर चुके हैं।

अभिव्यक्ति
(Kala Prashikshan Sansthan, SIKAR)
जहाँ नृत्य एक संस्कार है
प्रभा खेतान
शेखावाटी नृत्य शिरोमणि
SEASON 2

अभिव्यक्ति
(Kala Prashikshan Sansthan, SIKAR)
जहाँ नृत्य एक संस्कार है

अभिव्यक्ति
प्रभा खेतान
SEASON 2
Road, Sikar

फाउंडेशन की संस्थापक डॉ प्रभा खेतान के गृह जनपद चूरू में स्थापित केंद्र

महिलाओं की प्रगति राष्ट्र के सशक्तीकरण का आधार है। इसी सोच से **प्रभा खेतान फाउंडेशन** राजस्थान के चूरू जिले में स्थित सुजानगढ़ में *महिला जागृति समिति* के साथ मिलकर पिछले दो से भी अधिक दशक से ग्रामीण महिलाओं और उनके बच्चों के लिए कई तरह के कल्याणकारी कार्यक्रम संचालित कर रहा है।

इस केंद्र की गतिविधियों में शिक्षा, कला को बढ़ावा देने के साथ ही कौशल विकास प्रशिक्षण शामिल है। इसके तहत *जागृति मेला, सिलाई मशीन वितरण और निःशुल्क प्रशिक्षण, दिव्यांग साइकिल वितरण, बालिका अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिता, मेहंदी प्रशिक्षण और प्रतियोगिता, कंप्यूटर प्रशिक्षण, प्रभा खेतान एजुकेशनल अवार्ड* जैसे अनेक कार्यक्रम संचालित होते हैं।

राज साहब के पास हर चीज का 360 डिग्री नॉलेज था: राहुल रवैल

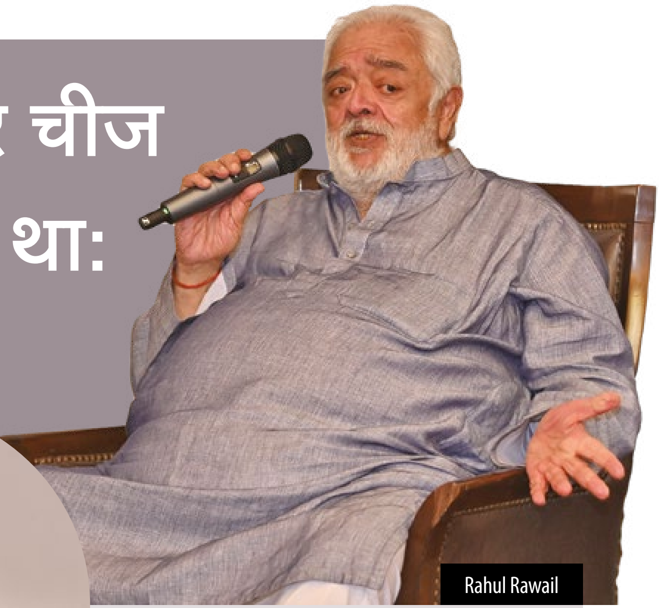
Rahul Rawail

Apra Kuchhal

"चार्ली चैप्लिन रूस में बहुत पॉपुलर थे। *'आवारा'* और *'श्री 420'* में राज साहब की एक्टिंग पर उनका असर था। पूरे सोवियत रूस में राज साहब इतने पॉपुलर थे कि वहां कई इलाकों की शादियों में *'मेरा जूता है जापानी'* और *'आवारा हूं...'* गीत जरूर बजता था।" यह कहना है फिल्मकार, निर्देशक, लेखक राहुल रवैल का, जो **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** जयपुर में बतौर अतिथि वक्ता संवाद कर रहे थे। आरंभ में **अहसास** वूमेन राजस्थान और मध्य भारत की समन्वयक अपरा कुच्छल ने बिना किसी विस्तृत भूमिका के हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए फाउंडेशन की पहल **'कलम'** और उसकी लोकप्रियता की चर्चा की। उन्होंने अतिथि वक्ता रवैल की लोकप्रियता का उल्लेख किया और परिचय की किसी रस्मी औपचारिकता से गुरेज करते हुए सबसे पहले यह जानना चाहा कि राजकपूर पर वैसे ही बहुत सारी किताबें लिखी जा चुकी हैं। आपने फिर क्यों सोचा कि उन पर किताब लिखें? और यह किताब कैसे अलग है?

रवैल का उत्तर था, " राज साहब पर जितनी किताबें आई थीं वे सब उनकी बातचीत, उनके शोमैन, होली की उनकी पार्टी वगैरह पर थीं। मैं चूंकि उनका असिस्टेंट रह चुका था, मैंने बहुत साल उनके साथ काम किया था, इसलिए किसी ने मुझसे कहा कि तुम एक किताब लिखो उनकी वर्किंग स्टाइल पर, कि वे काम कैसे करते थे। वहां से एक किताब शुरू हुई। मैं कृष्णा जी से मिला तो उन्होंने कहा कि तुम आखिरी व्यक्ति हो जिसने मेरे आदमी के काम को देखा है। अगर तुम नहीं लिखोगे तो दुनिया कभी जान नहीं सकेगी कि वे कैसे काम करते थे। इस बात ने मुझे बहुत प्रेरित किया।" रवैल ने कहा कि इस पुस्तक में जो भी घटनाए हैं, केवल यादें हैं। इसमें ऐसी बातें हैं, जिनका कभी नोट्स नहीं बना था। अब किताब पूरी हो जाने के बाद याद आ रहा कि ये अभी लिखा नहीं गया। कुच्छल के अगली किताब से संबंधित सवाल के उत्तर में रवैल ने कहा कि उसका कोई खाका अभी नहीं सोचा है पर *कपूर एंड संस* जैसी कोई किताब हो सकती है।

Rishi Mattu

कुच्छल ने रवैल की पुस्तक *'राज कपूर: बॉलीवुड के सबसे बड़े शोमैन'* की तारीफ की और उनसे उस घटना के बारे में पूछा जब वे ऋषि कपूर के साथ *'मेरा नाम जोकर'* के सेट पर पहुंचे थे? रवैल ने बताया कि मैं पंद्रह साल का था। मेरे सेकेंडरी के इम्तिहान खत्म हो चुके थे। तभी चिंटू का फोन आया कि पापा रशियन सर्कस के साथ आज से शूटिंग शुरू कर रहे हैं। आ जाओ चलते हैं। वहां बहुत सी रशियन लड़कियां हैं, जिन्होंने छोटे-छोटे कपड़े पहने हुए हैं। उन्हें देखते हैं। हम उन्हें देखने गये थे। मैं शूटिंग पहले भी देख चुका था। पर वहां राज साहब को देखा तो एक आदमी पांच हजार आदमी को कंट्रोल कर रहे हैं। सर्कस में दो-ढाई सौ बांबे के लोग हैं। सौ रशियन और फिर यूनिट, तो ये साढ़े छ हजार का क्राउड वे अकेले मैनेज कर रहे थे। फिर वे बहुत क्लियर थे। उन्होंने फैसला कर रखा था कि पहले ये होगा, फिर ये होगा, फिर ये होगा। उस चीज ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

लड़कियों को तो मैं भूल ही गया। इसके बाद मैं लगातार वहां गया। मेरे इम्जाम खत्म हो गये थे। मुझे आगे न्यूक्लियर साइंस पढ़ना था, जिसमें कुछ समय बाकी था। मैंने अपनी मां से पूछा कि तब तक मैं क्या साहब के साथ काम कर लूं। मेरे पिताजी ने राज साहब से पूछा। उन्होंने मुझे कहा भी कि एक बार जब यहां आ जाओगे तो साइंस वगैरह सब भूल जाओगे। यही हुआ भी। तब से आज तक मैं यही कर रहा। रवैल ने राज साहब से जुड़े एक सवाल के उत्तर में कहा कि उनके पास वरदान था या भगवान की देन थी। उनके पास हर चीज का 360 डिग्री नॉलेज था, जो मैंने और किसी फिल्मकार में नहीं देखी। सिनेमेटोग्राफी, एडिटिंग, एक्टर्स सब पर उनको जानकारी थी। म्यूजिक पर तो उनका कमाल था। रवैल ने एक मजेदार घटना भी सुनाई, जो *'मेरा नाम जोकर'* के एक गीत रिकॉर्डिंग के दौरान म्यूजिक स्टूडियो में घटी थी। वहां राजकपूर के साथ शंकर, जयकिशन, हसरत, शैलेंद्र और मुकेश बैठे थे। गाने की ट्युन के समय जो डमी वर्ड्स से उन्हें सुनकर मुझे लगा कि मैं कमरे से छलांग मार दूं या क्या करूं। क्योंकि वे सारे वर्ड्स दुनिया की तमाम गालियों के थे। सारे के सारे बहुत सीरियसली सुन रहे थे, और उसमें सुधार भी कर रहे थे। रवैल ने *'बॉबी'* के गाने *'हम तुम एक कमरे में बंद हों...'* से जुड़ा किस्सा भी सुनाया।

रवैल ने *'बॉबी'* फिल्म की शूटिंग के दौरान राजेश खन्ना और डिंपल की शादी और उससे जुड़ी स्थितियों के बारे में भी बताया। उन्होंने *'लव स्टोरी'* फिल्म में बतौर निर्देशक किसी का नाम न होने से संबंधित घटना को भी विस्तार से सुनाया। रवैल ने इस बातचीत के दौरान राजकपूर से जुड़े कई संस्मरण सुनाए। जिनमें उनका खाना, प्रेम, *'बॉबी'* के डिस्ट्रीब्यूटर रामू के घर देर रात पहुंच कर उसका प्रॉफिट मांगने और उसका लुंगी खोलकर ले जाने की घटना भी शामिल थी। रवैल ने नरगिस से लेकर मंदाकिनी जैसी नायिकाओं को चयन करने के पीछे की राजकपूर की सोच से जुड़े सवाल का भी उत्तर दिया। उन्होंने ऋषि कपूर से जुड़े कई सवालों के उत्तर दिए और कई घटनाओं के बारे में बताया। रवैल ने सवाल-जवाब सत्र में भी हिस्सा लिया और कहा कि शायद राजकपूर को ज्ञान के प्रति मेरी जिज्ञासा, मेरा सवाल करना पसंद आया था। आयोजकों की ओर से *ग्रास रूट* मीडिया फाउंडेशन के प्रमोद शर्मा ने अतिथि वक्ता रवैल को स्मृति चिह्न प्रदान किया। *आईटीसी राजपूताना* के महाप्रबंधक ऋषि माथुर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

__कलम__ जयपुर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हास्पिटैलिटी पार्टनर आईटीसी राजपूताना और वीकेयर का सहयोग मिला

भारत में पत्रकार आज भी बिकाऊ नहीं हैं: किताब लखनऊ में प्रेम प्रकाश

Brajesh Pathak , Keshav Prasad Maurya, Prem Prakash, Malini Awasthi and Madhuri Halwasiya

हर किताब का जन्म एक उत्सव है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** ने अपनी इसी सोच के तहत उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में वरिष्ठ पत्रकार प्रेम प्रकाश की पुस्तक *'रिपोर्टिंग इंडियाः पत्रकारिता की मेरी 70 वर्षों की अनवरत यात्रा'* का विमोचन समारोह आयोजित किया। **'किताब'** लखनऊ के तहत आयोजित इस कार्यक्रम का आरंभ **अहसास** वूमेन लखनऊ दीपा मिश्रा के स्वागत वक्तव्य से हुआ। उन्होंने फाउंडेशन का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि डॉ प्रभा खेतान द्वारा 1980 में स्थापित **प्रभा खेतान फाउंडेशन** देश भर में सांस्कृतिक, शैक्षिक, साहित्यिक और सामाजिक योजनाएं लागू करने के लिए प्रतिबद्ध व्यक्तियों और समान विचारधारा वाले संगठनों को मंच प्रदान करता है। फाउंडेशन प्रदर्शन कलाओं, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य, लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

फाउंडेशन हिंदी में **'कलम'** ; अंग्रेजी में **'द राइट सर्कल'** ; उर्दू, अरबी और फारसी के लिए **'लफ़्ज़'** ; अन्य भारतीय भाषाओं के लिए **'आखर'**, **'पोथी'**, **'किताब'** ; कला, संगीत और संस्कृति के लिए **'सुर और साज'** और **'एक मुलाकात विशेष'** जैसे कई कार्यक्रम करता है। भारतीय हथकरघा और हस्तकला को बढ़ावा देना भी पिछले चार दशकों से **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की कोशिश का हिस्सा रहा है। इसे व्यापक रूप देने के लिए भारत के 40 शहरों से क्रॉस-सिटी स्मृति चिह्न के लिए पारंपरिक हथकरघा और हस्तकला को चुना गया है, जो स्थानीय कारीगरों को बढ़ावा देता है।

मिश्रा के स्वागत वक्तव्य के पश्चात *ताज* लखनऊ के महाप्रबंधक विनोद पाण्डेय ने अतिथियों का अभिनंदन किया। स्वागत और अभिनंदन के पश्चात **'किताब'** लखनऊ के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, विशिष्ट अतिथि पद्मश्री से सम्मानित लोकगायिका मालिनी अवस्थी, वरिष्ठ पत्रकार लेखक प्रेम प्रकाश, फाउंडेशन की कार्यकारी न्यासी अनिंदिता चटर्जी, **अहसास** वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान, माधुरी हलवासिया, दीपा मिश्रा और विनोद पाण्डेय की मंचीय उपस्थिति में *'रिपोर्टिंग इंडियाः पत्रकारिता की मेरी 70 वर्षों की अनवरत यात्रा'* का विधिवत विमोचन किया।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री मौर्य ने वरिष्ठ पत्रकार प्रेम प्रकाश और उनकी पुस्तक की तारीफ करते हुए कहा कि आपने इस पुस्तक के माध्यम से जो दिशा दिखाई है, उसके लिए मैं आपका अभिनंदन करता हूं। मौर्य ने कहा कि यह क्षेत्र बहुत चुनौतियों से भरा होता है। चाहे वह आपदा हो, देश पर आया कोई संकट हो, युद्ध की स्थिति हो, या सामाजिक उथल-पुथल की स्थिति रही हो, अनेक घटनाओं को कवर करके समाज के सामने रखने का काम किया है। अनुवादक जसविंदर कौर बिंद्रा और प्रकाशक *प्रभात प्रकाशन* की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा कि आजादी के 75वें वर्ष में इस पुस्तक का हिंदी में आना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

उपमुख्यमंत्री पाठक ने कहा कि इस पुस्तक के विमोचन के लिए जब मुझे बुलावा मिला तो केवल इंट्रो पढ़ते हुए मुझे लगा कि मैं इसमें समाहित हो गया हूं। उन्होंने पुस्तक के शुरुआती पन्नों में ही समाहित घटना सीनियर्स की रैगिंग और जाड़े में गरम पानी की व्यवस्था को अपने अतीत से जोड़कर देखा और कहा कि वाकई हमारे जीवन में कितना बदलाव हो गया है। उन्होंने अपने विश्वविद्यालय के दिनों को याद किया, और कहा कि पुस्तक में लिखा है कि प्रेम प्रकाश जी ने चाचा और पिता द्वारा खोले गए स्टूडियो और फोटोग्राफी से शुरू कर आज कितना बड़ा मुकाम बनाया।

पाठक ने कहा कि आपने आज हिंदी जगत में देश ही नहीं दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क एएनआई के रूप में दिया, जिससे दर्शक ही नहीं अखबार नबीस, जो चैनल हैं वे जिंदा हैं। आज अगर एएनआई की फीड न मिले तो कितने चैनल जिंदा ही नहीं रहेंगे। आप चलते-फिरते इनसाइक्लोपीडिया हैं। आपने गांधी और नेहरू को कवर किया है। यह पुस्तक इतिहास के साथ पत्रकारों के लिए भी उपयोगी पुस्तक है। आपने देश की आजादी के साथ-साथ पत्रकारिता की दुश्वारियों का भी उल्लेख किया है।

विशिष्ट अतिथि अवस्थी ने एएनआई भवन में अपने दौरे का उल्लेख किया और प्रेम प्रकाश जी की पुस्तक की तारीफ की और कहा कि जब संचार साधनों की कोई व्यवस्था नहीं थी तब उन्होंने अपने को एक छाया-पत्रकार के रूप में स्थापित किया। उन्होंने कहा कि आज भले ही फोन से सारे तार जुड़े हैं, पर उस जमाने में ऐसी स्थियां नहीं थीं. अवस्थी ने ट्विटर पर खुद के ट्रेंड होने की एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि एएनआई विश्वसनीयता की एक बड़ी पहचान है और आने वाली पीढ़ी उसे और भी आगे ले जाने का काम करती है। उन्होंने कहा कि आधुनिक भारत के निर्माण का इतिहास इस पुस्तक में है। जो इतिहास में रुचि रखते हैं, देश में रुचि रखते हैं, उनके लिए उपयोगी पुस्तक है। मैं समझती हूं भविष्य वही अच्छा रचता है जो इतिहास को समझता है। आपके पूर्वजों ने किन कठिन संघर्षों से आज के पत्रकारिता की नींव गढ़ी है, यह जानना सभी के लिए जरूरी है।

अवस्थी के वक्तव्य के बाद मिश्रा ने अतिथि प्रेम प्रकाश का परिचय देते हुए कहा कि आपकी पत्रकारिता का अनुभव सात दशकों में फैला हुआ है। वर्तमान में आप भारत की प्रमुख मल्टीमीडिया समाचार एजेंसी एएनआई के अध्यक्ष हैं। आपने इस एजेंसी की स्थापना में भी मदद की और अब तक भारत के सभी प्रधान मंत्री के साथ न केवल बातचीत की है, बल्कि उनमें से कई का कैमरे के सामने साक्षात्कार भी किया है। आपने कई विदेशी प्रसारकों के साथ भी काम किया है और देश की पत्रकारिता को एक दिशा दी

Vinod Pandey, Brajesh Pathak, Keshav Prasad Maurya, Malini Awasthi, Madhuri Halwasiya and Anindita Chatterjee with Prem Prakash

है। उन्होंने आगे के संवाद के लिए **अहसास** वूमेन माधुरी हलवासिया को आमंत्रित किया।

हलवासिया ने पूछा कि 70 सालों के पत्रकारिता करियर में फोटो जर्नलिस्ट से मल्टीमीडिया जर्नलिस्ट तक के शिफ्ट को आप कैसे विवेचित करेंगे? प्रकाश का उत्तर था, "जिंदगी बदलती रहती है। टेक्नोलॉजी इतनी बदली है कि जो चीजें आज से सत्तर साल पहले थीं वह दिन ब दिन बदलती गयीं। अगर आप उसके साथ नहीं बदलेंगे या उससे आगे नहीं रहेंगे, तो मार खा जाएंगे।" उन्होंने अपने जमाने में फोटोग्राफी की शुरुआत- 35 मिलीमीटर फिल्म और स्टील फोटोग्राफी के मैग्रेटिक टेप के जमाने से आज तक के बदलाव को रेखांकित किया।

इस सवाल पर कि आपने अपनी आत्मकथा में लिखा है 'मेरा लक्ष्य भारत की विकृत छवि को सुधारने का है?' क्या आपका यह नजरिया किसी पत्रकार के नाते है, भावनात्मक रूप से है या निजी विचार शामिल है? प्रकाश का उत्तर था, "हम एक बहुत पुरानी सभ्यता हैं। यह बच्चे-बच्चे को मालूम है। मैंने शुरू से ही इतिहास पढ़ा था। जब मैं बीस साल का था तो काम करने के लिए स्वीट्जरलैंड गया। स्वीट्जरलैंड से जब मैं इंग्लैड पहुंचा, तो लोग बड़े उदार थे, पर यह देख कर बड़ा दुख हुआ कि वे भारत को सपेरों और महावतों का देश ही मानते थे। मैं तो ये दोनों ही नहीं था। या फिर वे महाराजाओं को जानते थे, क्योंकि उनके बीच कभी वही थे। जबकि महाराजा तो 1952 में खत्म हो चुके थे। पर अभी तक उन पर औपनिवेशिक युग का नशा था।"

प्रकाश ने अपनी बात को विस्तार देते हुए कहा कि मैंने तभी मन में यह सोचा कि स्वर्ग देखने के लिए तो खुद ही मरना पड़ता है और फिर बिना किसी मंदिर में गए वर्चुअली यह शपथ लिया कि मैं इस तरह का कुछ काम करूंगा जिससे हिंदुस्तान की इमेज को ठीक किया जाए। आज मैं खुशी से यह कह सकता हूं कि एएनआई की बदौलत दुनिया भर के चैनल्स मटेरियल रिसीव करते हैं। जितनी इमेज ठीक हो सकती है, करने की कोशिश हो रही।

राजनीतिक रूप से इस तरह की कोशिश का उल्लेख करते हुए उन्होंने विदेश मंत्री जयशंकर के इस बयान को याद किया कि पश्चिम को हमारे विचारों के साथ रहना सीखना होगा, जैसे हम उनके साथ रहते हैं। मैं तो यही कहूंगा कि हरेक को यह फैसला करना चाहिए कि उसे क्या करना है। मैंने तो उसी समय यह फैसला कर लिया था कि यह इमेज कोई बाहर वाला ठीक नहीं करेगा। उस वक्त मैं देखता था कि पंडित जी को भी फॉरेन करेस्पांडेंट को कहना पड़ता था, ये अच्छा है, वह अच्छा है।

आपने नेहरू जी से लेकर मोदी जी तक जैसे ताकतवर लोगों के साथ काम किया है। ऐसे लोगों के साथ काम करते हुए कई बार पत्रकार और नेताओं के बीच हितों का टकराव स्वाभाविक है, इस बारे में अपने अनुभव और चुनौतियों के बारे में कुछ बताएं? उत्तर में

Kanak Rekha Chauhan

Deepa Mishra

प्रकाश ने कहा कि नेता भी हमारी तरह हैं। राजनेता भी इनसान ही हैं। अगर दोनों ऐसा सोचकर चलें तो कोई विवाद नहीं होगा। उन्होंने बीस साल की उम्र में नेहरू जी के यहां के रिपोर्टिंग के अपने अनुभवों को शेयर किया और कहा कि मैंने हमेशा उन लोगों को अपने बड़े के रूप में देखा।

आज के समय में पत्रकार को राजनीतिक कैदी कहा जाता है। हर चैनल पर मीडिया ट्रायल्स डॉमिनेट करते हैं? ऐसे में पत्रकारिता जो लोकतंत्र का चौथा खंभा है और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्संबंधों को आप कैसे अभिव्यक्त करेंगे? प्रकाश ने कहा कि यह तो खुद पत्रकार के ऊपर निर्भर करता है। अगर कोई अपने को कैदी बना ले तो बना ले। हम उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते, पर मैं अभी भी यही कहूंगा कि भारत में ज्यादातर पत्रकार आज भी बिकाऊ नहीं हैं। कुछ ऐसे हो सकते हैं, जो राजनीतिक दलों का पक्ष रखते हैं। इस देश में कम से कम कोई पार्टी चैनल नहीं चला रही है। ये केवल प्रभावित करने की कोशिश करते हैं, जिसका उन्हें पूरा अधिकार है।

प्रकाश ने पत्रकारों के लिए स्व-नियंत्रण की आवश्यकता, मीडिया में बढ़ती प्रतियोगिता, खबरों की तथ्यात्मक जांच के लिए संपादकों के दायित्व, सोशल मीडिया के गैरजिम्मेदाराना प्रयोग पर खुलकर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने अपने जीवन की सबसे ऐतिहासिक घटनाओं में 1962 की जंग और उसके बाद के सालों में आए दुर्भिक्ष को याद किया, और उससे निबटने के लिए इंदिरा सरकार द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। नेहरू-गांधी परिवार ने हमें तीन प्रधानमंत्री दिए। उनका संबंध मीडिया से क्या था? प्रकाश ने कहा कि मेरे संबंध सभी से बेहतर थे। इंदिरा जी से भी मेरे संबंध बहुत अच्छे थे, पर मुझे आपातकाल के दौरान कई महीनों तक देश के बाहर रहना पड़ा।

प्रकाश ने अपनी अगली किताब अफगानिस्तान पर लिखे जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे कई वेद वहीं लिखे गए। हिंदुस्तान में इस्लाम बहुत विलंब से आया। हिंदुओं के अंदर सबसे बड़ी कमजोरी हमारी जाति है। वहां की महिलाएं बहुत आजाद थीं। प्रकाश ने सवाल-जवाब के सत्र में भी शिरकत की। प्रकाश ने भ्रष्टाचार की शुरुआत के लिए लाइसेंस-परमिट राज को जिम्मेदार बताया और कहा कि काला धन की वजह भी यही है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के संपादकों और एएनआई के संबंधों के बारे में भी खुलकर बताया। आपके जीवन का सबसे कठिन और सबसे सहज साक्षात्कार कौन सा था? के उत्तर में उन्होंने अटल जी की सहजता और अपने मधुर संबंधों को याद किया। प्रकाश ने मीडिया को आदर्श व्यवसाय बताते हुए वर्तमान हालातों को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। **अहसास** वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान ने आभार व्यक्त किया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __किताब__ लखनऊ के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट, सहयोगी लखनऊ एक्सप्रेशंस, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर ताज महल लखनऊ और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का भी सहयोग मिला

Recognising The Masters Of Timeless Creations

Richa Mirdha

Vikramajit Ram

Mughal art blossomed under the reign of rulers like Akbar, Jahangir and Shah Jahan. Artists and craftsmen from India's northern region worked with Iranians in royal workshops. This led to a radically new and rapidly evolving form of art. Very little is known about such artists and craftsmen, including Mansur, who was a miniaturist in the court of Jahangir. Former graphics designer and full-time author Vikramajit Ram was fascinated by the character of Mansur. After publishing books like *Elephant Kingdom: Sculptures from Indian Architecture*, *Dreaming Vishnus: A Journey through Central India*, *Tso and La: A Journey in Ladakh* and *The Sun and Two Seas,* his curiosity about the artist led him to write his latest work of historical fiction, *Mansur: A Novel.* **Prabha Khaitan Foundation** recently organised a session of **The Write Circle** in Jaipur with Ram, where he spoke about his latest novel. He was in conversation with Richa Mirdha, freelance editor and former television journalist. Mita Kapur delivered the welcome address to begin the session.

Mansur focuses on the subaltern in the Mughal courts, and reimagines the lives of artists who are responsible for timeless and enthralling creations that fascinate us even today. The story has characters inspired from painters of the late 1580s and early 1600s. "At first, it was general curiosity to learn about an artist, but, in the end, it culminated in a book about a Mughal era artist," said Ram, while introducing the book. "While a lot of the miniature paintings have been preserved and studied, very little is known about their creators. Like many other artists, there was hardly any record of Mansur's personal life, his birthplace or his place of burial."

> "Mansur was an artist under both Akbar and Jahangir, but owing to their shared interest in nature, Mansur rose in the ranks under Jahangir," he said. "He incorporated birds and animals in his paintings, which pleased Jahangir, who was an avid collector of exotic animals"

Mita Kapur

Rishi Mattu

The author shared some insights on the protagonist of his story. "Mansur was an artist under both Akbar and Jahangir, but owing to their shared interest in nature, Mansur rose in the ranks under Jahangir," he said. "He incorporated birds and animals in his paintings, which pleased Jahangir, who was an avid collector of exotic animals."

"Miniature paintings are rich in details," Ram continued. "You must look closely to find what lies in them and what the artist has tried to convey. I thank my editor for working with me and helping me release the best possible version of my book."

Kapur delivered the closing speech as Rishi Mattu felicitated the guests with mementos to conclude the session.

***The Write Circle** Jaipur is presented by Shree Cement Ltd in association with Siyahi, Spagia Foundation, ITC Rajputana and with the support of **Ehsaas** Women of Jaipur*

किसी भी प्रधानमंत्री को अच्छा-बुरा कहना, अनफेयर है: रशीद किदवई

Rasheed Kidwai

Riddhima Doshi

"सोशल मीडिया का इंपैक्ट तो बहुत है। पर पुराने जमाने में लोगों से मुलाकात करने के लिये लोग यात्रा करते थे, जिसे आज नहीं किया जा रहा है। सोशल मीडिया आर्टिफिशियल जोन है, अवे फ्रॉम रियलिटी।" यह कहना है रशीद किदवई का। सुपरिचित पत्रकार, स्तंभकार और राजनीतिक विश्लेषक किदवई **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** उदयपुर में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे। आरंभ में उनका परिचय **अहसास** वूमेन उदयपुर स्वाति अग्रवाल ने दिया। किदवई ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के विजिटिंग फेलो हैं। टेलीग्राफ के पूर्व सहयोगी संपादक रहे। सेंट स्टीफंस कॉलेज से स्नातक और यूनाइटेड किंगडम के लीसेस्टर विश्वविद्यालय से जन संचार में मास्टर्स डिग्री हासिल की। कई टेलीविजन चैनलों में भी योगदान किया और कई अखबारों के लिए स्तंभ लिख रहे हैं। आपने *'24 अकबर रोड'*, *'सोनियाः ए बायोग्राफी'*, *'बैलेटः टेन एपिसोड्स दैट हैव शेप्ड इंडिया'ज डेमोक्रेसी'*, *'नेता, अभिनेताः बॉलीवुड स्टार पॉवर इन इंडियन पॉलिटिक्स'* और *'दि हाउस ऑफ सिंधियाज़ः ए सागा ऑफ पॉवर, पॉलिटिक्स एंड इंट्रीग'* जैसी चर्चित पुस्तकों के अलावा हिंदी में *'भारत के प्रधानमंत्रीः देश, दशा, दिशा'* नामक पुस्तक भी लिखी है। अग्रवाल ने किदवई से आगे की बातचीत के लिए **अहसास** वूमेन उदयपुर रिद्धिमा दोशी को आमंत्रित किया।

Shraddha Murdia

Swati Agarwal

दोशी ने किदवई की राजनीति पर लिखी किताबों की बात की तो उन्होंने *'दि हाउस ऑफ सिंधियाज़'* की बात की और कहा कि यह सिंधिया के तीन सौ साल के राजत्व को बताती है। इन के पॉवर को देखें तो ये गांधी परिवार से ज्यादा पॉवरफुल मानीं जा सकती हैं, जिन्होंने एक साल भी अपनी पोलिटिकल पोजिशन को नहीं छोड़ा। अपनी बात को विस्तार देते हुए किदवई ने कहा कि भारत की स्वाधीनता से पहले सिंधिया राज कर रहे थे। आजादी के बाद जॉर्ज जीवाजिराव महाराज गवर्नर ऑफ स्टेट थे। 1957 में नेहरू जी ने उन को निमंत्रण दिया, पर वह नहीं गये और अपनी पत्नी राजमाता सिंधिया को भेजा। नेहरू के कहने पर उन्होंने चुनाव लड़ा और दो बार 1957 और 1962 सांसद रहीं। बेटा माधवराव सिंधिया, बेटियां वसुंधरा राजे और यशोधरा राजे में कोई न कोई लोकसभा, राजस्थान, मध्य प्रदेश की विधान सभा के सदस्य रहे। इस किताब में कई कहानियां हैं। उन के संघर्ष के बारे में लिखा है, सास, बहू के बारे में भी।

किदवई की *'नेता-अभिनेता'* पुस्तक के हवाले से दोशी ने ओटीटी युग में नेताओं की तुलना में अभिनेताओं की स्वीकृति पर सवाल पूछा तो किदवई का जवाब था, कोरोना के समय में लोगों का सिनेमा हाल जाना बंद हो गया। फिर ओटीटी प्लेटफॉर्म आया। उस समय मेगास्टार का जो कॉन्सेप्ट था आज नहीं है, वह पॉपुलैरिटी नहीं है। उन्होंने किताब के हवाले से नेहरू-स्टालिन की रूस में हुई मुलाकात के बीच राजकपूर और उनकी फिल्म 'आवारा' की लोकप्रियता और पृथ्वीराज कपूर से उनकी शिकायत वाली घटना भी बताई। उन्होंने कहा की मिस्र में लोग भले ही भारत के बारे में नहीं जानते पर अमिताभ बच्चन को जानते हैं। 'लिगेसी ऑफ कांग्रेस' पुस्तक से जुड़े सवाल पर किदवई ने कुछ दिलचस्प बातें बताईं। उन्होंने कहा कि हम सोचते हैं कि बहुत फेमस फैमिली है, अलग हैं पर ऐसा नहीं है। वहां भी आम बातें होती थीं, आम समस्यायें होती थीं। इंदिरा गांधी के जन्म के समय उन की दादी चाहती थीं कि लड़का पैदा हो। जब इंदिरा पैदा हुईं तो उन के घर में मुबारक अली थे जो बुजुर्ग थे और सालों से उनके घर की देखभाल करते थे। जब मोतीलाल नेहरू ने इंदिरा को लेकर उनकी गोद में दिया तो उन्होंने बेटा मुबारक हो, जुग-जुग जिये, खूब नाम रोशन करे, यही कहा, बेटी का जिक्र नहीं किया। नाम रोशन करने की जो बात थी नाम रोशन किया। वह बात सच हो गई।

उन्होंने इंदिरा गांधी को बहुत अटेंटिव और केयरिंग पर्सन बताते हुए उनकी जिंदगी में निजी स्टाफ और ड्राइवरों से जुड़े कुछ किस्से भी सुनाए और कहा कि जो कहते हैं कि वे डोमिनेटिंग थीं तो बहुत उतार चढ़ाव उनके जीवन में भी आया पर वह स्ट्रांग लेडी थीं, देश का इंटरेस्ट उनके लिये पहले था। किदवई ने सोनिया गांधी पर लिखी अपनी पुस्तक से जुड़े सवाल का भी विस्तार से उत्तर दिया और कहा कि वे बहुत प्राइवेट पर्सन हैं। वह राजीव गांधी से एक रेस्टोरेंट में मिली थीं और वह भारत के प्रधानमंत्री के बेटे हैं, यह बात भी एक खबर पढ़कर जानी थीं। दोशी ने किदवई से *'भारत के प्रधानमंत्री'* पुस्तक को लेकर सवाल पूछा तो किदवई ने साफ कहा कि बहुत बार तुलना होती है, पर ऐसा नहीं होना चाहिए, यह ठीक नहीं है। कई तो विषम परिस्थिति में पीएम रहे। कुछ को ज्यादा समय मिला कुछ को कम। कुछ ने काम किया कुछ कर नहीं पाये पर सभी में देश के लिये समर्पण की भावना थी। पॉलिटिकल व्यू सब के अलग हो सकते हैं। अच्छा या बुरा कहा नहीं जा सकता, ऐसा करना अनफेयर है। गलतियां हुईं पर वे भी इनसान हैं।

दोशी की जिज्ञासा पर किदवई ने लाल बहादुर शास्त्री, चंद्रास्वामी, फूलन देवी आदि के बारे में भी विस्तार से बताया। अपनी अगली किताब से जुड़े सवाल पर उन्होंने कहा कि बहुत सारे प्रोजेक्ट हैं। पॉलिटिकल लाइफ ऑफ अमिताभ बच्चन और जया बच्चन और नादरवाला केस पर काम कर रहा हूं। उन्होंने सवाल-जवाब सत्र में भी हिस्सा लिया और बेहद खरे उत्तर दिए। किदवई ने भविष्य की राजनीति, डिजिटल पत्रकारिता का बदलता चेहरा, राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा और मीडिया के बदलाव पर भी अपने मत रखे। आयोजकों की ओर से अतिथि वक्ता को शॉल भेंट कर अभिनंदन किया गया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ उदयपुर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हैं रेडिसन ब्लू उदयपुर पैलेस रिज़ॉर्ट और स्पा

आखिर में मोहब्बत ही जीतती है, यही मेरा संदेश है: रत्नेश्वर सिंह

Ratneshwar Kumar Singh

Anshu Mehra

“आज हिंदी का ज्यादातर लेखन परंपरागत लेखन है। मेरा ऐसा मानना है कि वैश्विक स्तर पर प्रयोग करने की जो हिम्मत है, भारतीय भाषाओं के लेखन में उस प्रयोग की हिम्मत नहीं है।” यह बात **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **‘कलम’** चंडीगढ़ में अतिथि लेखक रत्नेश्वर सिंह ने कही। आयोजकों की ओर से नीलिमा डालमिया अधार ने सबका स्वागत किया। उन्होंने कला, शब्द, साहित्य, संस्कृति और महिलाओं को मजबूती दिलाने की फाउंडेशन की मुहिम के बारे में विस्तार से बताया। अतिथि वक्ता सिंह का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि सिंह जब बड़हिया में थे, तभी प्रकृति, किसान जीवन और ध्यान से उनका परिचय हो गया था। आपने अखबार और टेलीविजन दोनों ही माध्यमों में काम किया। आपकी अब तक 22 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन पुस्तकों में *‘जीत का जादू’*, *‘मीडिया लाइव’*, *‘लेफ्टिनेंट हडसन’*, *‘सिम्मड़ सफ़ेद’*, *‘रेखना मेरी जान’*, *‘एक लड़की पानी पानी’*, *‘महायुग त्रयी’*, *‘सफल हिन्दी निबंध’* आदि शामिल है। आपको पत्रकारिता–साहित्य के लिए भारत सरकार का ‘भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार’ भी मिल चुका है। अधार ने आगे के संवाद के लिए **अहसास** वूमेन मेरठ अंशु मेहरा को आमंत्रित किया।

मेहरा ने सिंह के परिचय को विस्तार देते हुए उनसे पूछा कि स्टोरी मास्टर का खिताब कहां से आया? सिंह ने पटना में स्कूल के दिनों की वह रोचक घटना सुनाई। जब शिक्षक गणेश दत्त सर ने छात्रों से कहानी सुनने की इच्छा जाहिर की, और फिर सिंह की कहानी से इतने खुश हुए कि उन्हें ‘स्टोरी मास्टर’ का खिताब दे दिया। जब भी उनका पढ़ाने का मन नहीं होता या उन्हें कहानी सुननी होती, वे सिंह को दूसरी कक्षाओं में भी कहानी सुनाने के लिए बुला लेते। कहानी सुनाने का सिलसिला घर से ही शुरू हुआ था। सिंह ने अपने परिवार से जुड़े सवाल का भी उत्तर दिया और बताया कि लेखन की शुरुआत नागपुर में हुई। अपने लेखन में विविधता से जुड़े सवाल का उत्तर देते हुए सिंह ने अपने कहानी संग्रह *‘सिम्मड़ सफ़ेद’* के पटना में आयोजित लोकार्पण समारोह में प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह द्वारा दिए गए वक्तव्य की चर्चा की कि किस तरह से उन्होंने उन 22 मिनटों में उनकी उस पूरी कृति को ही खारिज कर दिया। पर आखिर में उन्होंने एक पंक्ति कही, ‘लेकिन रत्नेश्वर के पास कहानी कहने का मसाला है। और आज यहां लोकार्पण के लिए जो हाथ उठे हैं, ये उसको सार्थक करेंगे।’ वह मेरे लिए टर्निंग प्वाइंट था और मुझे यह लग गया था कि परंपरागत लेखन से मुझे अलग होना होगा। इसके बाद मैं पूरी तरह बदल गया। बाद की मेरी दो कहानियां कई साल बाद प्रकाशित हुईं, जो प्रयोगात्मक और विज्ञान पर थीं।

अपनी बात को विस्तार देते हुए सिंह ने कहा कि यह मैं नहीं करता। पंचतत्व मुझसे कराते हैं। कोई निर्देश देता है। मुंबई पहुंचना, प्रेरणाप्रद कहानी लिखना, जंगल पहुंच कर स्थितिप्रज्ञ की अवस्था में रहने ने मेरे लेखन को एक दिशा दी। पंचतत्वों से जब मेरी बात हुई तो पता चला यह पहले से ही तय था, मुंबई मुझे परिवार से अलग रहने के लिए भेजा गया था। जंगल में मेरे ईर्दगिर्द चीता घूमता रहता था। वहां मैंने क्या खूबसूरत सांप देखे। मेरी आंखों में वह सांप आज भी बसा हुआ है। घड़ियाल को देखा। मेरी बाइस दिन तक स्थिति प्रज्ञ की स्थिति रही। शायद उसी तैयारी के चलते मैं पर्यावरण, प्रकृति, पानी की बात लिखता हूं। *‘रेखना मेरी जान’* को ग्लोबल वार्मिंग का उपन्यास बताते हुए सिंह ने बताया कि कभी *इंडिया टुडे* ने कवर स्टोरी में ऐसे वाकिए का जिक्र था। मैंने इस पर काम किया तो पाया कि सबसे पहले बांग्लादेश डूबेगा। मैंने वहां के उस वातावरण का उल्लेख अपने उपन्यास में किया है जब सब कुछ डूबता है, लोग सब कुछ छोड़ कर भागते हैं। भारतीय सीमा पर नायक को गोली लगती है, पर नायिका नायक को वापस बांग्लादेश ले जाती है। मेरा संदेश यही है कि आखिर में मोहब्बत ही जीतती है। मोहब्बत की यह थीम *‘रेखना मेरी जान’* के अलावा *‘एक लड़की पानी–पानी’* में भी है, जिस पर मैंने चार पंक्तियां भी लिखी हैं–

कागज के उस पटल पर जब मेरी नजर पड़ी
उभर आई थी वो सूरत वो दिखने लगी थी
उसका चेहरा मेरे चेहरे में यूं आ मिला था
था उसी का वो चेहरा पर मैं देख रहा था...

सिंह ने अपने उपन्यासों पर विस्तार से बात की और कहा कि प्रकृति कोई रेखा नहीं बनाती है। उन्होंने कहा कि मैं लेखकों से बार–बार अनुरोध करता हूं कि आप नायक बनाइए। नई पीढ़ी के सामने केवल संघर्ष परोसने से बचिए। दुनिया वही बदलता है, जो परंपराएं तोड़ता है। यहां उन्हें तोड़ने के साथ नई परंपरा गढ़ना भी जरूरी है। सिंह ने अपने *महायुग त्रयी* उपन्यास के बारे में भी विस्तार से बात की। उन्होंने इस उपन्यास कड़ी के पहले खंड *‘32000 साल पहले’* और उसके दूसरे खंडों के बारे में भी बताया। उपन्यास तथ्यात्मक लगे इसके लिए मैंने भौतिकी की पढ़ाई की, जीरो प्वाइंट फील्ड के बारे में भी बताया। युवाओं को इसीलिए यह उपन्यास पसंद आ रहा है क्योंकि मैंने वैज्ञानिक तरीके से अपनी बात समझाई है। सिंह ने सवाल–जवाब सत्र में भी हिस्सा लिया। सिंह का अभिनंदन स्मृति चिह्न देकर किया गया। **अहसास** वूमेन दीपाली भसीन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

Dipali Bhasin

Neelima Dalmia Adhar

Jaish Mehra

Anant Vijay

__अहसास__ वूमेन दिल्ली के सौजन्य से आयोजित __कलम__ दिल्ली के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट, दिनेश नंदिनी रामकृष्ण डालमिया फाउंडेशन और हॉस्पिटैलिटी पार्टनर इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का सहयोग मिला।

राजस्थानी लोकगीतों में है मिट्टी की सुगंध: उषा बजाज देशपांडे

Usha Bajaj Deshpande

Kiran Rajpurohit Nitila

"राजस्थान में लोकगीत पीढ़ियों से चले आ रहे हैं, इनमें मिट्टी की सुंगध है। इन गीतों की खासियत यह है कि यह बहुत सीधे और सरल हैं। शास्त्रीय संगीत की कोई बंदिश नहीं होने के बावजूद भी ये लय में हैं। लोकगीत जीवन के सरल, साधारण पलों का वर्णन होते है।" **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा *ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन* के सहयोग से आयोजित **'आखर'** राजस्थान में ये बातें अतिथि वक्ता उषा बजाज देशपांडे ने कहीं। उनसे संवाद लेखिका किरण राजपुरोहित नितिला ने किया। इस अवसर पर देशपांडे की पुस्तक *'मरूभूमि में गूंजे गीत'* की भी चर्चा हुई।

नितिला ने पूछा कि आप महाराष्ट्र में रहती हैं और अब मराठी परिवार का हिस्सा है। आपके पूर्वज राजस्थान से महाराष्ट्र कब और कैसे गए? देशपांडे ने बताया, "मेरे परदादा खेमराज बजाज लगभग 12 वर्ष की आयु में चुरू से मुंबई चले गए थे। वहां उन्होंने श्री वेंकटेश्वर प्रेस की स्थापना की। वे दूरगामी सोच के व्यक्ति थे। यह प्रेस अब भी संचालित है और मेरे भाई इसे संभालते हैं। मेरे दादा जब साहित्यकारों, संगीतकारों आदि से पुस्तकें लिखवाते थे, तो उन्हें घर पर ही ठहराते थे। उनको भोजन कराने के बाद ही खाना खाते थे।" मुंबई में रहते हुए राजस्थानी गीतों की ओर रूझान कैसे हुई? के उत्तर में देशपांडे ने कहा, "राजस्थानी लोकगीतों से मेरा परिचय मेरी दादी की मार्फत बचपन में ही हुआ। वह सभी राजस्थानी रीति-रिवाज मानती थीं और पूजा पाठ करती थीं। वह हर त्यौहार पर गीत गाने वाली महिलाओं को बुलाती थीं। कई बार राजस्थान से भी गायकों को बुलाती थीं। उन गीतों में बधावै, रातीजगा और गणगौर के गीत गाए जाते थे। मराठी और शास्त्रीय संगीत की परम्परा वाले परिवार में शादी होने के बाद कुछ पारम्परिक गाने मैंने पति को सुनाए तो उन्होंने शास्त्रीय संगीत के बारे में सिखाया और इनके सुर-ताल, लय की पहचान भी करवाई। मैंने लीलाबाई सोमानी से भी बहुत से गाने सीखे।"

Pramod Sharma

Sonakshi Vashishtha

Chitra Purohit

Abhilasha Pareek

पति के प्रोत्साहन और गीतों के चयन से जुड़े सवाल पर देशपांडे ने कहा कि कोरोनाकाल में समय अधिक मिला, तो गीतों के खजाने में से कुछ गीतों को अलग किया। प्रीत, विरह, शादी ब्याह, तीज-त्योहार, शिशु जन्म के गीत लिए और हिन्दी में उनका भावार्थ लिखा। कोमल कोठारी मेरे पति के बहुत अच्छे मित्र थे तो उनकी किताबें हमारे घर पर थीं। विजयदान देथा की किताबें मैंने पढ़ीं तो मुझे बहुत सारी बातें पता चलीं। मेरी भतीजी जो अंग्रेजी माध्यम से है, उसने कहा कि बुआ आप हिंदी में लिखोगी तो मैं कैसे समझूंगी, मेरे लिए इनको इंगलिश में भी लिखो। यह बात मेरे परिवार को भी पसंद आई। वैसे दुख की बात है कि हमारे मुंबई, पुणे के लोग हिंदी भी नहीं बोलते हैं। तब मेरी दक्षिण भारतीय मित्र ने इन गीतों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। मेरे बेटे ने इसमे क्यूआर कोड भी जोड़ा। इस तरह इस पुस्तक का जन्म हुआ। कुछ गीत मैंने मित्र सुरुचि मोहता से लिए हैं। हमने इन गीतों की रिकॉर्डिंग भी घर पर ही की।

देशपांडे का कहना है कि ये लोक गीत बहुत सीधे और सच्चे हैं। इनमें जीवन के सभी प्रमुख हिस्सों की अभिव्यक्ति के साथ ही परिवार, समाज की मंगल कामना भी कूट-कूट कर भरी हुई है। हर गीत में मांगल्य है। ये गीत रोजमर्रा के कामकाज करते हुए बनाए गए हैं। उन स्त्रियों को मेरा प्रणाम है जिन्होंने इन गीतों की रचना की हैं। इनमें उत्सव-प्रियता, वात्सल्य-प्रियता के भाव हैं। ऐसे ही एंटीक गीतों को लोक गीत कहते हैं। लोक भाषा बहुत प्यारी और मीठी है। राजस्थानी गीतों की बहुत बड़ी संपदा है। ऐसा ही एक लोक गीत सुनें- *कठै सूं आई सूंठ कठै सूं आयो जीरो कठै सूं आयो रे म्हारी भोली भावज म्हारो बीरो।* यह इतना सरल गीत है कि दो महिलाओं ने रसोई में काम करते हुए यह गीत बना लिया। अंत में वह कहती है *'या किंडै गई सूंठ बिखर गयो जीरो। अरै रूस् गयो रै म्हारी भोली भावज म्हारो बीरो।'* वह क्या जवाब देती है *'चुग लेस्यां सूंठ बुहार लेंस्यां जीरो मनाए लेस्या रै ननद बाई रै थारो बीरो।'* यह इतने प्यारे शब्द हैं, इतने सरल हैं, कोई विद्वता नहीं है। इनमें कोई पांडित्य नहीं हैं। बस दिल की प्रीत है, इन्हीं को हम लोक गीत कहते हैं। इसी तरह भगवान गणेश को निमंत्रण का गीत है। लोकभाषा बहुत सरल और मीठी रहती है और इन गीतों को किसी सुर की बंदिशों में नहीं बांधा जा सकता है।

55 गीतों के संग्रह वाली अपनी पुस्तक में गीतों से जुड़ी विविधता के बारे में देशपांडे ने बताया कि राजस्थान के गीतों में बड़ी विविधता है। इनमें केवल विवाह के ही नहीं बल्कि प्रेम, विरह, तीज-त्यौहार आदि के भी गीत हैं। हम अपने इष्ट देव को भी अपना मित्र मानते हैं। महाराष्ट्र में भगवान गणपति को नाचते कूदते विदा करते हैं, तो गणगौर में भी बहुत अच्छे गीत गाए जाते हैं। इनमें से कई गीत रोमांटिक भी हैं, जैसे *'म्हारा बाबा जी नै मांडी गणगौर सुसरा जी रै मांडो रंग रो झुमकड़ो। लाइजो लाइजो रे म्हारा ननद बाई रा बीर हठीलो झुमकड़ो...।'* ऐसे ही गणगौर, तीज, सावन, पणिहारी के गीत हैं। अनपढ़ स्त्रियों द्वारा रचित ये गीत किसी भी बड़े साहित्यकार की रचना से कम नहीं है। आयोजकों की ओर से *ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन* के प्रमोद शर्मा ने **आखर** के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

*ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के सहयोग से **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **आखर** के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर आईटीसी राजपूताना का सहयोग मिला।*

हिंदी और उर्दू में मेरे लिए कोई अंतर नहीं: आलोक श्रीवास्तव

Aalok Shrivastav

Neelima Dalmia Adhar

ये सोचना ग़लत है कि तुम पर नज़र नहीं
मसरूफ़ हम बहुत हैं मगर बे–ख़बर नहीं.
हम आपके इशारे पे घर–बार छोड़ दें
दीवाने हैं जरूर पर इस कदर नहीं.... शायर, गीतकार और टीवी पत्रकार आलोक श्रीवास्तव ने अपनी यह ग़ज़ल **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** जोधपुर में सुनाई। वे इस कार्यक्रम में बतौर अतिथि उपस्थित थे। प्रीति मेहता ने आयोजकों और **अहसास** वूमेन की अपनी सहयोगी सुषमा नीरज सेठिया और शैलजा सिंह की ओर से अतिथियों का स्वागत और धन्यवाद ज्ञापित किया।

मेहता ने श्रीवास्तव के काम की विस्तार से जानकारी देते हुए उनके काव्य–संकलन *'आमीन'* और कहानी संग्रह *'आफरीन'* की चर्चा की और उन्हें मिले पुरस्कारों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि आलोक की साहित्यिक रचनाओं के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। आपकी रचनाओं को जगजीत सिंह, पंकज उधास, शंकर महादेवन, रेखा भारद्वाज, सोनू निगम, जावेद अली, उस्ताद राशिद खान, शान, शुभा मुद्गल, अमिताभ बच्चन जैसे दिग्गजों ने आवाज दी है। मेहता ने अनुष्का शंकर और ए. आर. रहमान के साथ आलोक के काम और उनके द्वारा शिव तांडव के किए गए भावानुवाद के आशुतोष राना द्वारा स्वर दिए जाने की चर्चा के बीच इनकी शायरी के वायरल होने और लोगों के दिल में उतर जाने का जिक्र किया और आगे की बातचीत के लिए दिल्ली से पधारी साहित्यसेवी लेखिका **अहसास** वूमेन नीलिमा डालमिया अधर को आमंत्रित किया।

कभी तो आसमां से चांद उतरे जाम हो जाये
तुम्हारे नाम की इक ख़ूबसूरत शाम हो जाये... बशीर बद्र के इस शेर के साथ अधर ने श्रीवास्तव की तारीफ की और उनसे उनकी लोकप्रिय ग़ज़ल *'ये सोचना ग़लत है कि तुम पर नज़र नहीं'* सुनाने का अनुरोध किया। श्रीवास्तव ने **'कलम'** जोधपुर के आयोजकों का आभार प्रकट करते हुए नामचीन शायर शीन काफ़ निज़ाम की उपस्थिति को परीक्षा की घड़ी बताते हुए उन्हें नज़्र करते हुए यह शेर पढ़ा–
असर बुजुर्गों की नेमतों का, हमारे अंदर से झांकता है,
पुरानी नदियों का मीठा पानी, नए समंदर से झांकता है।
इसके बाद श्रीवास्तव ने *'ये सोचना ग़लत है'* ग़ज़ल सुनाई। श्रीवास्तव ने इस ग़ज़ल के पीछे की कहानी भी बताई। अधर के अनुरोध पर श्रीवास्तव ने *'नजर की राह में यूं तो कई नजारें हैं, तुम्हीं पे जाके जो ठहरे नजर तो क्या कीजे'* ग़ज़ल भी सुनाई और बताया कि मैं फिल्मों के लिए लिखता हूं। वहां एक शगुन की तरह है कि चीज जितनी पुरानी हो अच्छा है। बर्फी फिल्म के गीत *'फिर ले आया दिल मजबूर क्या कीजे'* के बाद रेखा भारद्वाज ने मुझसे कहा कि ऐसी ग़ज़ल चाहिए जिसकी रदीफ क्या कीजे हो। तो यह ग़ज़ल लगभग दस साल पहले ही तैयार हो गई थी। अभी इसे प्रतिभा सिंह बघेल ने गाया है।

एक सवाल के उत्तर में श्रीवास्तव ने कहा कि मेरी परवरिश हिंदी–उर्दू के माहौल में हुई। मुझे हमेशा बड़े लोगों की सरपरस्ती मिली। उन्होंने

Preeti Mehta

Shelja Singh

Sushma Sethia

Sheen Kaaf Nizam

Brijesh Ambar

आमीन से जुड़े सवाल का उत्तर देते हुए कहा कि ये मेरी कामधेनु गाय है। इस पर मुझे कई पुरस्कार मिला। दुष्यंत की परंपरा का ग़ज़लकार कहे जाने पर श्रीवास्तव ने नामवर सिंह और कमलेश्वर को याद किया और कहा कि हिंदी और उर्दू में मेरे लिए कोई अंतर नहीं है। मेरे लिए ग़ज़ल–ग़ज़ल है। मेरी दोनों किताबें उर्दू में भी आ रही हैं और अंग्रेजी में भी। अधर ने पूछा कि आपकी सबसे पहली रचना कौन सी थी? श्रीवास्तव ने सुनाया–
जब भी तकदीर का हल्का सा इशारा होगा
आसमां पर कहीं मेरा भी सितारा होगा
दुश्मनी नींद से करके हो पशेमानी में
अब कहां पर मेरे ख्वाबों का गुजारा होगा...
अधर ने हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू से लगाव और फिर इश्क से उर्दू के जुड़ाव का जिक्र करते हुए श्रीवास्तव से पूछा कि आपने इश्क करने के लिए उर्दू सीखी या उर्दू सीखकर इश्क किया। श्रीवास्तव ने कहा कि आपने एक गलत शायर से एक सही सवाल कर लिया। मेरा पहला इश्क मेरी मां से था। मैं उन्हीं की प्रेरणा कवि बना। श्रीवास्तव ने अपने परिवार, शहर और उसकी आबोहवा का जिक्र किया और कहा कि इश्क था, संस्कृति से, तहजीब से, ज़बान से। मां ने ही मेरे लेखक बनने की जिद पर कहा था आमीन।

अधर ने श्रीवास्तव से मां और बाबू जी पर लिखी कविताएं सुनाने का अनुरोध किया, तो श्रीवास्तव ने उसे सुनाने से पहले यह शेर सुनाया–
बात करो तो लफ़्ज़ों से भी ख़ुशबू आती है,
लगता है इस लड़की को भी उर्दू आती है
हम ने भी तो दिल जीते हैं मीठे लफ़्ज़ों से
हम कायस्थों को भी थोड़ी उर्दू आती है
श्रीवास्तव ने इसके बाद अम्मा और बाबूजी दोनों कविताएं सुनाईं, जिनकी कुछ पंक्तियां यों थी–
बाबूजी
घर की बुनियादें दीवारें बामों–दर थे बाबू जी
सबको बांधे रखने वाला ख़ास हुनर थे बाबू जी...
'मां'
धूप हुई तो आंचल बनकर कोने–कोने छाई अम्मा
सारे घर का शोर–शराबा, सूनापन, तन्हाई अम्मा...

श्रीवास्तव ने इसके बाद अधर के अनुरोध पर अपनी यह नज़्म भी सुनाई–
जो हममें तुममें हुई मुहब्बत,
तो देखो कैसा हुआ उजाला
वो खुशबूओं ने चमन संभाला,
वो मस्जिदों में खिला तबस्सुम
वो मुस्कराया है फिर शिवालय...
उन्होंने शिव तांडव स्तोत्र के भावानुवाद से जुड़ी पृष्ठभूमि के साथ ही वह रचना सुनाया, और बताया कि कैसे आशुतोष राना ने इसे रिकॉर्ड किया। इस दौरान उन्होंने *'जो दिख रहा है सामने वो दृश्य मात्र है, लिखी रखी है पटकथा, मनुष्य पात्र है'* से जुड़ी घटना बताया। श्रीवास्तव ने इस दौरान अपनी ग़ज़ल यात्रा के ढेर सारे अनुभव शेयर किए। अतिथियों का अभिनंदन स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ जोधपुर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर ताज हरिमहल जोधपुर का सहयोग मिला।

हिंदी में गालिब पर नहीं थी किताब इसलिए लिखी *'गली क़ासिम जान'*: विनोद भारद्वाज

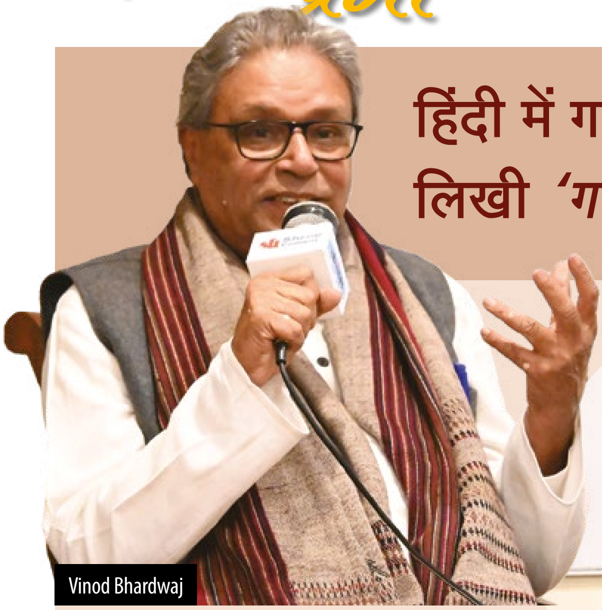
Vinod Bhardwaj

Chandraprakash Deval

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता... गालिब की यह शायरी निराला को बहुत पसंद थी। वह कहते थे कि इसमें वेदांत का निचोड़ है।" यह कहना था विनोद भारद्वाज का। वे **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** अजमेर में बतौर अतिथि वक्ता बोल रहे थे। आयोजकों की ओर से अतिथियों का स्वागत और धन्यवाद विनीता जैन ने किया। उन्होंने हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने की दिशा में कलम की गतिविधियों की चर्चा की और भारद्वाज का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि भारद्वाज वरिष्ठ पत्रकार, चित्रकार, फोटोग्राफर और लेखक हैं। आपने कैफी आजमी और हिंदी पत्रकारिता पर दो पुस्तकों का संपादन किया है और प्रगतिशील कलमकारों के समूह के महासचिव हैं। उन्होंने भारद्वाज से उनकी पुस्तक *'गली क़ासिम जानः ज़िंदगीनामा मिर्ज़ा ग़ालिब'* पर आगे के संवाद के लिए वरिष्ठ लेखक चंद्रप्रकाश देवसरे को बुलाया।

देवसरे ने भारद्वाज से उनके बचपन, शुरुआती शिक्षा और अतीत के बारे में जानना चाहा। भारद्वाज ने बताया कि उनकी पैदाइश देहरादून की है। जब मैं छोटा था तो पिता जी को लकवा का अटैक पड़ा, इसके चलते मैं अपने ननिहाल अलीगढ़ आ गया। मेरी पढ़ाई-लिखाई यहीं हुई। यहीं मैं कुछ ऐसे उस्तादों से मिला जिनका ताल्लुक साहित्य से था। वहां कॉलेज में गोपाल दास नीरज मेरे गुरु थे। उनके असर से कविता लिखने का मुझ पर जुनून सा सवार हो गया। एक बार मैंने कविता लिखी और वह साप्ताहिक हिंदुस्तान में छप भी गयी। बहुत खुशी से मैं उसे नीरज जी को दिखाने ले गया, तो उन्होंने कहा कि तुमने मेरी पूरी नकल की है। तुम कविता लिखना छोड़ दो या फिर अपने तरह की कविता लिखो। इसके बाद मुझमें कभी कविता को लेकर कोई उत्साह नहीं रहा।

भारद्वाज ने उसके बाद अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, उर्दू के माहौल, राही मासूम रज़ा से जुड़ी यादों के साथ दिल्ली की अपनी रिहाइश और गली क़ासिम जान से जुड़ी अपनी यादों को शेयर किया कि कैसे उस रास्ते से गुजरते हुए उन्हें पता चला कि गालिब यहां रहते थे, और उसकी दशा देख उन्हें यह लगा था कि हिंदी में गालिब पर काम होना चाहिए। भारद्वाज ने विस्तार से गालिब से अपने लगाव और पुस्तक से जुड़ी अपनी खोज के बारे में बताते हुए कहा कि मैं जब गालिब पर काम कर रहा था, तो उन पर मुझे हिंदी में कोई किताब नहीं मिली। बहुत मुश्किल से मैंने उन पर सामग्री तलाशी, उनके खतों से गुजरा और फिर यह किताब आ सकी। देवसरे ने गालिब के जीवन की स्थितियों, अंग्रेजों के ऑफर और 1857 में उनकी भूमिका के साथ ही उनके लेखन पर उनके जीवन के हालातों से जुड़ा सवाल पूछा तो भारद्वाज का उत्तर था कि मैंने हमेशा गालिब को एक आदमी के रूप में उनकी खामियों और अच्छाइयों के साथ देखा है। गालिब का अंग्रेजों से रिश्ता उनकी अपनी पेंशन से जुड़ा था। वह उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ जाने से रोकती थी।

Vinita Jain

Nand Bhardwaj

Surendra Chaturvedi

गालिब भी *'साफ़ छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं'* की तर्ज पर निजी पत्रों में तो अंग्रेजों को खूब कोसते थे, पर सामने आकर शिकायत नहीं करते थे। गालिब ने *'दस्तंबू'* जैसी किताब बहुत जल्दबाजी केवल ब्रिटेन की रानी को खुश करने के लिए लिखी थी। वह सोचते थे कि अगर यह रानी के पास पहुंच जाएगी तो उनकी पेंशन बहाल हो जाएगी। गालिब को अंग्रेजों ने कभी बहुत ज्यादा तंग नहीं किया। भारद्वाज ने मुगलिया सल्तनत के पारिवारिक झगड़ों का जिक्र करते हुए गालिब की जिंदगी के कई रोचक किस्से बताए। उन्होंने कहा कि गालिब की बेसिक तर्बियत बहुत अलग ढंग से हुई, रईसी में हुई। वह छोटे थे तो उनके पिता और चाचा चले गये। वह नाना के घर में पले-बढ़े। दिल्ली आ गये, 13 साल की उम्र में शादी हो गई तब भी दिक्कत नहीं हुई। गालिब की दिक्कत तब शुरू हुई जब उनके ससुर नवाब लोहारू के छोटे भाई नवाब इलाही बख्श खां का देहांत हो गया। उनकी मां जो आगरा से पैसे भेजती थीं, वह भी नहीं रहीं, तब उनकी मुश्किलें शुरू हुईं।

गालिब को रईसी की आदत थी। उन्होंने गरीबी ओढ़ रखी थी। उस दौर में उनके पास कम पैसे नहीं थे,न उन्हें कम पैसे मिलते थे। गालिब की जिंदगी में दो साल ऐसे थे जब उन्हें पैसे की कमी नहीं थी। पर उनकी आदतें ऐसी थीं कि पैसे कम पड़ जाते थे। जब वे कलकत्ता से लौटे तो उनके ऊपर चालीस हजार का कर्ज था। गालिब उस दौर की गुरबत के बारे में एक जगह लिखते हैं कि लोग रोटी खाते हैं, मैं कपड़े खाता हूं। इसका मतलब था कि उमराव बेगम कपड़े बेचकर घर का खर्च चलाती थीं। अपनी किताब की भाषा, मंजरनामा और शैली से जुड़े सवाल पर भारद्वाज ने बताया कि इस किताब को लिखते वक्त मुझे लगता रहा कि मैं हमेशा उसी माहौल के बीच रह रहा हूं। जहां तक भाषा की बात है गालिब के खतों ने इसमें बहुत मदद की। भारद्वाज ने बताया कि इस पुस्तक के सात ड्राफ्ट मैंने फाड़कर फेंक दिए। उन्होंने अपनी पुस्तक *'गली क़ासिम जानः ज़िंदगीनामा मिर्ज़ा ग़ालिब'* के कुछ अंश पढ़कर भी सुनाये। उन्होंने सवाल-जवाब सत्र में हिस्सा लिया। अंत में आयोजकों की ओर से वरिष्ठ साहित्यकार नंद भारद्वाज ने अतिथि वक्ता और संवादकर्ता को स्मृति चिह्न प्रदान किया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ अजमेर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। वी केयर का सहयोग मिला।

लेखक की बाजार से दोस्ती होनी चाहिए: अनंत विजय

Anant Vijay

Unnati Singh

"मार्क्सवादी 'भोगा हुआ यथार्थ' की बात करते हैं और भारतीय संस्कृति 'अनुभूत सत्य' की बात करती है। आखिर विभाजन का भोगा हुआ यथार्थ जितना पंजाबी में लिखा गया, उतना हिंदी में मार्क्सवादियों ने क्यों नहीं लिखा? मेरा मानना है मार्क्सवादियों ने रचनात्मकता को नुकसान पहुंचाया है।" यह बात लेखक, पत्रकार, स्तंभकार, समीक्षक अनंत विजय ने **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** अमृतसर में कही। **अहसास** वूमेन शीतल खन्ना ने अतिथियों का स्वागत और धन्यवाद किया और फाउंडेशन की गतिविधियों की जानकारी दी।

अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए खन्ना ने बताया कि अनंत विजय लंबे समय से पत्रकारिता और लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। आपने राजनीति, साहित्य और सिनेमा पर खूब लिखा है। आपकी अब तक ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें *'बॉलीवुड सेल्फी'* और *'मार्क्सवाद का अर्धसत्य'* काफी चर्चित रहीं। आपकी पुस्तक *'अमेठी संग्राम'* के कई संस्करण आ चुके हैं। यह पुस्तक अंग्रेजी में *'Dynasty to Democracy'* नाम से प्रकाशित हुई है। सिनेमा पर सर्वोत्कृष्ट लेखन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 'स्वर्ण कमल', राजस्थान के प्रतिष्ठित महाराणा मेवाड़ सम्मान और बिहार सरकार के डॉक्टर फादर कामिल बुल्के पुरस्कार से सम्मानित विजय वर्तमान में दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं और आपको हिंदी पत्रकारिता का सबसे प्रतिष्ठित 'गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान' भी मिल चुका है।

खन्ना ने आगे के संवाद के लिए **अहसास** वूमेन इंदौर उन्नति सिंह को आमंत्रित किया। सिंह ने पूछा कि आप लेखक, पत्रकार और फिल्म आलोचक भी हैं। आप एक साथ इतनी चीजें कैसे कर लेते हैं? विजय का उत्तर था कि आप में ऊबने की आदत होनी चाहिए। पहले मैं राजनीतिक पत्रकारिता करता था, फिर ब्रॉडकास्ट जर्नलिज्म में आ गया। फिर सिनेमा में आ गया। इसके बाद कल्चर और साहित्य में आ गया। हो सकता है, आने वाले समय में कहीं और चला जाऊं। अभी मैं फिल्मों पर लगातार पढ़ रहा हूं। आपकी अपनी पसंदीदा पुस्तक कौन सी है? के उत्तर में विजय ने कहा कि वह पुस्तक अभी आनी है। हो सकता है कि कश्मीर पर जो किताब मैं लिख रहा हूं कि कश्मीर से धारा 370 कैसे हटाई गई, उसके पीछे की क्या कहानी रही, प्रधानमंत्री की उसके पीछे क्या सोच रही, गृहमंत्री ने क्या कहा, एनएसए की क्या भूमिका रही, हो सकता है, वह मेरी प्रिय किताब हो, पर अभी का पता नहीं। *'बॉलीवुड सेल्फी'* पुस्तक से जुड़े सवाल पर विजय ने कहा कि जमालपुर जो मेरा शहर है, उसमें एक ही मुहल्ले में, गांव में दो राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता रहते हैं। एक विनोद अनुपम और दूसरा मैं। विजय ने अपनी यादों में दो दशक पहले अनुपम को मिले पुरस्कार के समय की अपनी यादों को भी श्रोताओं के साथ बांटा।

Sheetal Khanna

Preeti Gill

Praneet Bubber

Gurpratap Khairah

Arvinder Chamak

विजय ने कहा कि *'मार्क्सवाद का अर्धसत्य'* पुस्तक मेरे व्यक्तित्व को परिभाषित करती है। मैंने उन्हें बहुत नजदीक से देखा है। उनकी चापलूसी और दुचित्तेपन को देखा है। वे कहते कुछ और हैं करते कुछ और हैं। घर में महिलाओं के बारे में कुछ और राय रहती है और बाहर वे नारी स्वतंत्रता की बात करते हैं। मैंने तब उसे पढ़ना शुरू किया। पूरे मार्क्सवाद में पर्यावरण की बात है ही नहीं। फिर मेरी पुस्तक मार्क्सवाद से अधिक मार्क्सवादियों के बारे में है। उन्हें पढ़ते हुए मुझे कोफ्त होने लगी। मैं नोट करते हुए एक किताब बना दिया। उस पुस्तक ने एक वैकल्पिक विमर्श दिया है। विजय ने इस दौरान कला, संस्कृति पर विदेशी प्रभाव से आए दुष्परिणामों की चर्चा की और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद के बारे में खुलकर बताया। हिंदी साहित्य से जुड़े एक सवाल के उत्तर में विजय ने विभाजन, हिंदी साहित्य, मार्क्सवाद की सोच और उर्दू कविताओं पर विस्तार से विचार रखा। विजय ने कहा कि मेरा लेखन कथेतर है। मेरे सभी पात्र जीवंत हैं। मुझे उनके बारे में कल्पना नहीं करनी पड़ती। मेरे विचार से साहित्य में कुछ भी मौलिक नहीं है। किसी पर कुछ लिखने से पहले मैं उसके पीछे की परंपरा को देखता हूं।

युवा पीढ़ी में नया करने की ललक की तारीफ करते हुए विजय ने कहा कि नई पीढ़ी के रचनाकार पुराने दायरों को तोड़ रहे हैं। हिंगलिश से जुड़े सवाल पर विजय ने कहा कि पहले आप रचना तो आने दीजिए। भाषा अपने हिसाब से चलेगी। भाषा गंगा की तरह से है। वह गोमुख से निकलकर गंगोत्री तक पहुंचती है। उसे अविरल चलने दीजिए। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं का अपना शब्दकोश होना चाहिए। लेखक को बढ़िया सेल्समैन होना चाहिए। जितना प्रकाशक प्रयास करता है उससे अधिक लेखक को प्रयास करना चाहिए। विजय ने अपनी पुस्तक *'अमेठी संग्राम'* की बिक्री में सोशल मीडिया से मिली मदद का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में लेखक हमेशा ही मंत्रियों से ऊपर रहा है। आप बाजारवाद का विरोध कर सकते हो, पर बाजार का नहीं। लेखक की बाजार से दोस्ती होनी चाहिए। विजय ने फिल्म जगत से जुड़े कई सवालों का विस्तार से उत्तर दिया और *'अमेठी संग्राम'* पुस्तक लिखने के पीछे की कहानी भी बताई। उन्होंने कहा कि अमेठी से राहुल गांधी की हार भारतीय राजनीति की बहुत बड़ी घटना थी, क्योंकि वह ऐसे पहले कांग्रेस अध्यक्ष थे, जो पद पर रहते हुए चुनाव हारे। उन्होंने पुस्तक में शामिल कई दिलचस्प प्रसंगों की चर्चा भी की और दर्शकों के सवाल-जवाब के भी उत्तर दिए। कार्यक्रम के अंत में **अहसास** वूमेन प्रीति गिल ने शॉल भेंट कर विजय का अभिनंदन किया।

*अहसास वूमेन के सौजन्य से आयोजित **कलम** अमृतसर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर ताज स्वर्णा और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का सहयोग मिला।*

The Audience Gets to Decide

Samar Khan

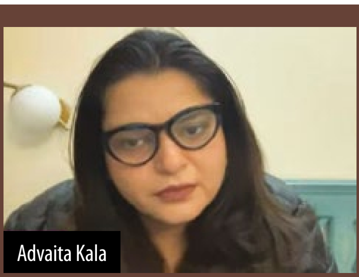
Advaita Kala

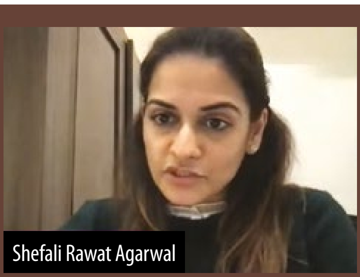
Shefali Rawat Agarwal

Samar Khan is well known in the world of film production and television entertainment journalism. The CEO of Juggernaut Productions was incisive in his views during a session of **Tête-à-Tea** organised by **Prabha Khaitan Foundation.** He was in conversation with screenwriter Advaita Kala, and spoke about films, viewership, the Indian army and, of course, content creation. The guest and the moderator were introduced to the virtual audience by Shefali Rawat Agarwal, **Ehsaas** Woman of Kolkata.

"Through my film, *Shaurya*, I wanted to tell the world that the Indian Army is above caste, creed and religion," said Khan, who had, incidentally, also been at the National Defence Academy. "The army only believes in the colour of the uniform, the national flag, and the pride of India. I was in the NDA for three years, but could not complete my training. That's why I tend to make content on national defence and the armed forces, as reflected in my works like *Shaurya, The Test Case, Code M* and *Avrodh.* But, for me, the army does not just mean war and secret operations. I try to explore the different shades of emotions in their lives."

> The beauty of content creation is that it allows viewers to interpret a film in multiple ways. Content creators must remain true to their gut beliefs and let the audience interpret content the way they want... more stories are getting told because of OTT, and numerous writers are getting opportunities to reach more audiences

But Khan did not consciously choose the path he treads. "I did not have a definite career path as such," said the filmmaker. "Life decided my career paths. I took whatever life threw at me as a challenge. The beauty of content creation is that it allows viewers to interpret a film in multiple ways. Content creators must remain true to their gut beliefs and let the audience interpret content the way they want."

What kind of impact has OTT content had on viewers' choices? "Movie halls will remain," said Khan. "During the advent of VHS or cable television, people believed that no one would leave the comfort of their homes to go to a movie hall. But they did! Even today, movies like *Avatar* witness brilliant levels of footfall."

Has OTT shifted the focus from just Hindi cinema to more regional content? "Cinema is the soft representation of our culture," opined Khan. "Be it the influence of Punjab or the South Indian states, the filmmakers decide how to craft their movies in a way that retains the essence of cultural representation. OTT allows a wider representation by involving good actors from different corners of India. We're still limited to a local audience, but more stories are getting told because of OTT, and numerous writers are getting opportunities to reach more audiences. First, we have to win over our audience; then we can think of tapping a global audience."

The engaging session concluded with a vote of thanks delivered by Agarwal.

This session of ***Tête-à-Tea*** *was presented by Shree Cement Ltd in association with Kahalli*

A Man and a Legacy Worth Remembering

Shashi Tharoor

Suhel Seth

Few figures in India's political firmament possess the kind of erudition that Shashi Tharoor does. His multi-dimensional approach has earned him a wealth of experience as an author, orator, politician and diplomat. Tharoor's world view and incisive commentary on current affairs command respect the world over. He is also a prolific writer; it was, thus, a matter of great excitement that he has written a book on the Father of the Indian Constitution, Bhimrao Ramji Ambedkar, better known as Babasaheb Ambedkar. Born a Dalit, with no privileges, Ambedkar went on to become an icon as the chief architect of the Indian Constitution — the foundation of the modern Indian polity. **Prabha Khaitan Foundation** organised a special **Kitaab** session to launch Tharoor's latest book, *Ambedkar: A Life*.

"The book is a treasure-trove of the life and ideologies of a man who shaped the Constitution of India," said Tharoor after the unveiling of the book, as he sat down for a candid conversation with Suhel Seth, the celebrated Indian businessman and columnist. Other notable people present at the unveiling of *Ambedkar* were Bashabi Fraser, the Foundation's associate from Scotland, Nitin Bahl, Hotel Manager of ITC Sonar, Sangeeta Datta, **Ehsaas** Woman of London, Madhuri Halwasiya, **Ehsaas** Woman of Lucknow, Shradha Saraf, Chairperson of FICCI FLO Kolkata, Anindita Chatterjee, Executive Trustee of the Foundation, and Malika Varma and Esha Dutta, **Ehsaas** Women of Kolkata.

Right off the bat, Seth gave the audience a few reasons why everybody should read Tharoor's book. "It contextualises the person to whom we owe the making of the Indian Constitution," he said. "It paraphrases the enormous intellectual struggle that Ambedkar had to wage with his contemporaries, among whom were formidable personalities like M.K. Gandhi, and tells you that while a lot has changed, nothing has."

Through his book, Tharoor also addresses the concerns related to the present-day Indian democracy, where free speech is being curtailed and hatred is taking precedence over harmony. "I wanted to write a book on a man that looms large in our national consciousness," said Tharoor. "It tells you everything that you must know about the man and, at the same time, tries to interpret his legacy. He is revered by Indians and his stature has continued to grow enormously even after his death."

"I referred to several events and made many anecdotal references connected to the crucial years of Ambedkar's life, such as 1927, when he realised that he needed the power of political weaponization to help the masses, or 1932, when he visited Gandhi to request him to give

Anindita Chatterjee, Bashabi Fraser, Madhuri Halwasiya, Malika Varma, Shradha Saraf, Esha Dutta, Nitin Bahl and Sangeeta Datta with Shashi Tharoor and Suhel Seth

up his pledge to fast unto death," said the author. "Even though Ambedkar enjoyed great stature and national visibility, he was concerned about the nation and felt bitter about the government."

Tharoor also shared some insights about Ambedkar's thoughts, intellect and academic prowess. "Ambedkar was a serious economist," he said. "His work on provincial taxation in British India is considered a classic. As a pioneering sociologist, he presented a paper on caste at Columbia University. It was the first study of caste as a sociological phenomenon in Indian society. Being a Dalit, his aim was the emancipation of Dalits and other backward classes. So, when the nationalist movement was happening, Ambedkar was not only fighting for the independence of our country, but also trying to bridge the class divide in India."

> "Ambedkar was a serious economist. His work on provincial taxation in British India is considered a classic. As a pioneering sociologist, he presented a paper on caste at Columbia University. It was the first study of caste as a sociological phenomenon in Indian society. Being a Dalit, his aim was the emancipation of Dalits and other backward classes. So, when the nationalist movement was happening, Ambedkar was not only fighting for the independence of our country, but also trying to bridge the class divide in India"

The scintillating discussions included more stories and insights from Tharoor on Ambedkar. The author and moderator also discussed some pressing issues of the past, such as the social stigmas faced by Ambedkar, and the political inclinations and historic decisions that left an indelible mark on his life and on the nation. "It must have been an intellectual struggle for Babasaheb to make his Constitutional viewpoints stand out while pitted against eminent contemporaries of his time," reflected Tharoor. "But, fortunately, Babasaheb was the epitome of stubbornness! He had the toughness to fight the powers of society which were against the people and his principles." The author admitted that Babasaheb never held back from expressing his scathing views on Gandhi and his principles. He did not even want to surrender to the Congress, so that he could continue to fight for the cause of the Dalits and India's other backward classes.

A brilliant Q&A session followed, one that resulted in some thought-provoking insights on Ambedkar overcoming discrimination and showing humility to build the strength of his character. Esha Dutta delivered the vote of thanks at the conclusion of the session.

__Kitaab__ Kolkata was presented by Shree Cement Ltd in association with Ficci Flo Kolkata, Aleph Book Company, ITC Sonar and with the support of __Ehsaas__ Women of Kolkata

A Christmas Celebration

Shreedevi Sunil

The children enjoying the puppet show

The puppet show saw the active participation of students

Mahek Gupta
First-year student of Law
Hidayatullah National Law University, Raipur

In the spirit of the holiday season, **Prabha Khaitan Foundation**, under its **Muskaan** initiative, hosted a Christmas celebration for underprivileged children and children with special needs. Children from Prayas, Maya Foundation and Azad Foundation attended the event.

The children were welcomed with Santa hats at the Satyajit Ray Auditorium of the Indian Council of Cultural Relations in Kolkata. The auditorium was filled with gleeful children, wearing their Santa hats and excitedly anticipating the show. Their wait ended once Ms Sumitra Ray, the Student Programmes Advisor of the Foundation, delivered the welcome address.

In her address, Ms Ray talked about how **Muskaan** was committed to bringing smiles to children's faces. This was the first in-person event being hosted since the genesis of **Muskaan** during the pandemic period. She also introduced Ms Shreedevi Sunil, who conducted the puppet show for the young audience.

After Ms Ray's address, Ms Sunil took the stage. She talked about the art of puppetry and how one gives life, a voice, and the ability to move to the puppets. Without the puppeteer, the puppet is a mere soft toy. To begin her show with a sense of surprise, she had the children close their eyes and wait for the magic words, "Abracadabra!" The children opened their eyes to a tortoise puppet, who prepared them for the story, *The Gingerbread Man*.

A group of enthralled children had their eyes glued to the puppets. The old man and lady, the red hen, the bear, the crocodile and, of course, the little gingerbread man. Watching a childhood classic be narrated through puppets was fascinating and exciting. It was almost like hearing an altogether new story. Throughout the tale, the puppets interacted with the children, who boisterously answered them. After the tale was complete, another puppet story called *Snow White* was enacted. A gruff-voiced, white, furry animal sang some Christmas carols with the children. He goofed up by suddenly singing 'Twinkle Twinkle Little Star' in the middle of 'Jingle Bells', which had everyone in splits. The roars of laughter echoed in every nook and corner.

After the conclusion of the puppet show, upon the children's request, Ms Sunil told them a horror story – a short story that went from eerie to comedic. The children were overjoyed by the event; Tina Saha, an individual with special needs, thoroughly enjoyed the event and described it as "magic". The 11-year-old Seema found the puppets adorable and enjoyed the singing. Mr Samarth, administrator at Awaaz, described the afternoon as an "amazing time of joy".

Ms Ray was overwhelmed by the event, and the children had a lot of fun. Ms Sunil was superb and everyone was entranced by her antics. "The initiative will forever be remembered by me, and I hopefully gave the children something to smile about," she said.

Honouring the Joy of Art

Integral to **Prabha Khaitan Foundation**'s vision is empowering children by nurturing their creative and critical faculties. In order to encourage students to develop their artistic capabilities, the Foundation, under its **Muskaan** initiative, organised an art competition for school students from Classes VI to XII. Art competitions give students an ideal platform to display their creative and artistic abilities, thus often having a life-changing effect. This competition witnessed the enthusiastic participation of over 100 participants from all over the country under various categories. The three primary themes of the competition were 'Carnival', 'Love Nature', and 'Festival of Lights'. The pupils were inspired to hone their talents further after their outstanding works of art were recognised and awarded with prizes and certificates.

*This session of **Muskaan** was presented by Shree Cement Ltd*

CARNIVAL

Joyshree Barman, Class VI

Taran Jindal, Class VII

Uttsav Mundhra, Class VI

Festival of Lights

Mayukh Dey, Class XI

Raghav Sharma, Class XII

Archana Singh, Class XII

Love Nature

Armaan Ahmad, Class X

Aarav Bachhawat, Class IX

Apal Jain, Class IX

Dressing Fancy for Christmas Day

Kindness, joy, togetherness, charity and peace form the essence of the Christmas spirit. With **Prabha Khaitan Foundation**'s dedication to promoting the values of empathy and kinship, Christmas is indeed a special time of the year. The Foundation, under its **Muskaan** initiative, that nurtures the skills and talents of children, organized 'Fancy Dress Duo' — a fancy dress event for parents and their children, from nursery to Class IV. Participants wore similar clothing as part of this exercise in creativity, emphasizing the importance of supporting children's creative aspirations. The event garnered an overwhelming response, as children and parents dressed up as their favourite icons such as Santa Claus, Santa's elves, Mother Mary and Jesus Christ to celebrate the Christmas cheer.

*This session of **Muskaan** was presented by Shree Cement Ltd*

Celebrating the True Meaning of Christmas

Awaaz

Maya Foundation

Christmas celebrates the spirit of togetherness in various ways. It reminds us of the values of empathy and gratitude as we take the time to give, share and forgive. In the spirit of Christmas, **Prabha Khaitan Foundation**, through its **Muskaan** initiative, reached out to help the needy. Over 2,000 blankets and cakes were distributed to various organisations in the city, such as Prayas, Durbar, Sri Sri Academy, Missionaries of Charity, Mother House, Maya Foundation and Awaaz. Spreading smiles amongst the less fortunate, the event successfully upheld the true meaning of Christmas and underlined the Foundation's commitment to social welfare.

Mother House

Sri Sri Academy

Missionaries of Charity, Dum Dum

Prayas

Darbar

‘सर्व भाषा कवि गोष्ठी’ और ‘मगही साहित्य’ पर संवाद

अपनी भाषा, अपने लोग की सोच पर आधारित **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की पहल **‘आखर’** को पटना पुस्तक मेले के दौरान भी विशिष्ट पहचान मिली। मेले में स्थानीय भाषा, संस्कृति और साहित्य से जुड़े मंचों पर फाउंडेशन से किसी न किसी रूप में कभी न कभी जुड़े साहित्यकारों का बोलबाला रहा, तो दो आयोजन ऐसे भी थे, जिनमें फाउंडेशन ने सीधे **‘आखर’** के बैनर तले सहयोगी की भूमिका निभाई। पुस्तक मेला के दौरान आखर की ओर से *‘सर्व भाषा कवि गोष्ठी’* और *‘मगही साहित्य’* पर आधारित कार्यक्रम गुफ्तगू का आयोजन किया गया।

‘सर्व भाषा कवि गोष्ठी’ की बात करें तो राज्य से जुड़ी और दुनिया भर के स्वभाषा प्रेमियों के बीच प्रचलित पांच अलग भाषाओं का कविता पाठ इतना प्रभावी रहा कि श्रोता और साहित्य समीक्षक दोनों अभिभूत नजर आए। कार्यक्रम में डॉ विद्या चौधरी, प्रभात वर्मा, नेहा नुपुर, डॉ पुतुल प्रियम्बदा और श्रीकांत व्यास जैसे भाषाई कवियों ने भाग लिया, और अपनी प्रिय भाषा में सृजित कविताएं सुनाईं। डॉ. विद्या चौधरी ने बज्जिका में स्वरचित कविता *‘हम बिहार हथीन’* का पाठ किया। उनकी कविता में कोरोना काल में दूसरे शहरों में काम करने वाले मजदूरों को जिन संकटों का सामना किया इसका जिक्र है।

इसी तरह रचनाकार प्रभात वर्मा ने मगही में रची कविता *‘सुना हमर मगही बतीया’* का पाठ किया, तो श्रोता वाह-वाह कर उठे। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन भाषाओं की बोलियों में जो मिठास है, वह अपनी भाषा जानने वाले श्रोताओं को रस से सराबोर कर देती है। वर्मा की कविता मगही माई को समर्पित है। विशेष बात यह कि वर्मा ने कविता पाठ के बीच ही मगही भाषा की महिमा का बखान भी किया और यह इच्छा भी जता दी कि मगही को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कर उसे उसका मान दिया जाए।

‘आखर’ की इस *‘सर्व भाषा कवि गोष्ठी’* में अगली बारी भोजपुरी की कवयित्री नेहा नूपुर की थी। नूपुर ने भोजपुरी में एक बेहद चर्चित कविता सुनाई, जिसके बोल थे *‘कहला पे लग जाई धक से’*। इस कविता पर श्रोताओं ने खूब तालियां बजाई। इसी क्रम में डॉ. पुतुल प्रियम्बदा ने जहां मैथिली भाषा में कविताएं पढ़ीं, वहीं श्रीकांत व्यास ने अंगिका में 2-3 कविताओं का पाठ किया। इन कविताओं में सामाजिक बुराई, ढोंग पर प्रहार के साथ ही शिक्षा की प्रेरणा भी थी। जैसे डायन प्रथा पर *‘डायन सिद्ध हो गैल हो भई’* कविता थी, तो कलयुग के साधुओं पर *‘साधु बड़ा रंगीला छई’* कविता और शिक्षा को महत्त्व देने पर केंद्रित *‘तेतरी के भेजबो रोज स्कूल’* काफी सराही गई।

पटना पुस्तक मेले में गुफ्तगू के तहत **आखर** की ओर से *‘मगही साहित्य’* पर आधारित कार्यक्रम में ओमप्रकाश जमुआर ने धनन्जय श्रोत्रिय से बातचीत की। श्रोत्रिय संपादन-प्रकाशन, कोश-विज्ञान एवं सामाजिक कार्य से जुड़ी ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने हिंदी, मगही, खोरठा, अंगिका, भोजपुरी कोश पर अपने काम से देशव्यापी पहचान बनाई है। *‘बृहद् मगही-हिंदी कोश’*, *‘खोरठा-हिंदी संदर्भ कोश’* जैसे उनके कामों की पहचान ने इन भाषाओं की मजबूती में अपना योगदान दिया है। इस संवाद के दौरान इन भाषाओं की लोकप्रियता, इनका साहित्य, लघु कथा, कहानी, मगही, पाटली आदि पत्रिकाओं की बात भी उठी।

संवादकर्ताओं का निष्कर्ष था कि मगध की प्रसिद्धि पूरे विश्व में है, ऐसे में मगध की अपनी भाषा मगही को बेहतर स्थान मिलना चाहिए। यह काम हर स्तर पर होना चाहिए। साहित्यकार और पाठक, प्रकाशक सभी का साथ आवश्यक है। हालांकि श्रोत्रिय ने यह माना कि मगही में पत्र-पत्रिकाओं की कमी है, पर पुस्तकों का प्रकाशन खूब हो रहा है। यह इस लिहाज से भी महत्त्वपूर्ण है कि गद्य साहित्य भाषा को समृद्ध करता है। लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि काव्य-महाकाव्य के बिना साहित्य की परिकल्पना अधूरी है। इसलिए रचनाकारों को संतुलन रखना होगा। उनका स्पष्ट मत था कि मंच पकड़ना है तो कविता रचनी होगी और यदि साहित्य में जगह बनानी है तो गद्य लिखना होगा। पर ध्यान रहे कि लिखने में संज्ञा को नहीं बिगाड़ना चाहिए।

संवाद के दौरान एक सवाल के उत्तर में श्रोत्रिय ने कहा कि मगही के महत्त्व को समझने या बताने के लिए शब्दों को बिगाड़ने की आवश्यकता नहीं है। यह बात दिमाग से हटानी होगी कि शब्द को विकृत करना ‘मगही’ है। तत्सम शब्द का रूप बिगाड़ना साहित्य के लिए ठीक नहीं है। श्रोत्रिय ने इस बात पर बल दिया कि मगही का विकास युवाओं के दम पर होगा, इसलिए इसे लेकर नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि युवाओं को अपनी भाषा के योगेश्वर प्रसाद, रामनरेश पाठक और मथुरा प्रसाद नवीन जैसे कवियों को पढ़ने की जरूरत है।

A Look Towards the Future

Central to **Prabha Khaitan Foundation**'s vision is its unwavering commitment to advancing literature, education, the performing arts, culture, gender equality and women's empowerment. With the help of its associates — individuals and organisations equally devoted to similar goals — the Foundation has been successful in executing cultural, educational, intellectual and social welfare initiatives across India. Thus, to realise the Foundation's vision, successful meetings are essential for fruitful collaborations.

Here are a few glimpses of meetings held with eminent people such as Shweta Aggarwal from the Humane Foundation, Shobha Tharoor Srinivasan, author and the curator of the Muskaan Literature Festival, Anoop Bhargava of JhilMil New York and Shradha Saraf, Chairperson of FICCI FLO Kolkata. Together, the Foundation and its associates look towards a hope-filled future!

Shweta Aggarwal with Sundeep Bhutoria, Anindita Chatterjee and Manisha Jain

Sundeep Bhutoria and Anindita Chatterjee meet Shobha Tharoor Srinivasan

Manisha Jain, Anindita Chatterjee, Cathy Tongper and Rachna Seth with Anoop Bhargava

Sundeep Bhutoria and Anindita Chatterjee meet Shradha Saraf

The meeting with Anoop Bhargava in progress

M.K. Narayanan, Sundeep Bhutoria, Vidya Balan and Alka Bangur light the lamp at the event

In Honour of Excellence

Vidya Balan is a National Award winning actress who has been lauded as one of the finest artists of the industry. In 2012, **Prabha Khaitan Foundation** conferred the prestigious Prabha Khaitan Puraskar on the actor. A woman achiever is awarded the Prabha Khaitan Puraskar for her remarkable contributions to society and for advancing the cause of women in India. The Calcutta Chamber of Commerce Foundation, the social arm of one of the oldest chambers of trade in Asia founded in 1830, arranged the event. Alka Bangur, former President of Calcutta Chamber of Commerce (CCC) and M.K. Saharia, Chairman, Education & Awards Committee, Calcutta Chamber of Commerce, were also present on the occasion.

M.K. Narayanan, the former Governor of West Bengal, handed over the award to Balan while Sundeep Bhutoria, Trustee of the Foundation, gave the actor an *uttoriyo* designed by the renowned Sharbari Dutta and a cash award of Rs 1 lakh.

"I feel doubly privileged to felicitate Vidya Balan, who is from the same town in Kerala to which I belong," said Narayanan, in his inaugural address. "I am glad that the Foundation has put in place an endowment that supports women's initiatives across a broad spectrum and also rewards women achievers."

Balan is also the youngest recipient of the award. Earlier recipients of the award have been stalwarts such as Medha Patkar, Vandana Shiva, Kapila Vatsyayan, Shabana Azmi, Shanu Lahiri and others. "I feel elated to receive the

Sundeep Bhutoria, M.K. Narayanan and Alka Bangur hand over the Prabha Khaitan Puraskar to Vidya Balan

Prabha Khaitan Puraskar and join the ranks of some of the most illustrious women of India, who have, over the years, been honoured with this prestigious award," said the actor. "I hope I continue to grow with the blessings of Kolkata and live up to the reputation of the *puraskar*."

"Vidya Balan has made her mark in the male-dominated film industry through hard work and determination, and silently continues to inspire and encourage millions of women in India," concluded Sundeep Bhutoria.

Doing Small Things With Great Love

Every year, when many of us are wrapped up in layers of warm clothing and cosying up with hot cups of coffee, there are millions of homeless people battling the cold, harsh winter out on the streets. Homeless people from the northern parts of India, and those from rural areas across the country have little to no access to warm clothes or even sheets to cover their bodies. Owing to the lack of shelter, warm clothes, and basic amenities, many of them die trying to brave the low temperatures and chilly winds. According to the Government of India, after lightning, the second major reason for deaths in India are the cold winters. This winter season, **Prabha Khaitan Foundation** collaborated with the Student Federation of India and helped them distribute blankets to the homeless and the ill who were in dire need of warm materials to survive the cold. It is, after all, the responsibility of the fortunate to help those who are not.

Making Education Universal

"One child, one teacher, one pen, and one book can change the world." These were the words of Malala Yousafzai, the Pakistani education activist and Nobel Peace Prize laureate – words that underline the transformative power of education. Children worldwide have the right to an education that helps them bridge the gap between their reality and the life they envisage. However, the fight for equitable and affordable education remains long and tenuous.

In India, illiteracy and the lack of access to educational facilities have remained the biggest factors responsible for the slow growth of the country. According to data from the National Statistical Office (NSO), India has an average literacy rate of 77.70% as of the year 2021. In India, male literacy is at 84.70% and female literacy is currently at 70.30% as of 2021. And while the figures might indicate that literacy levels have increased, the reality is quite different.

According to the 2011 Census, there are 76,34,98,517 (76.34 crore) literate people in the nation. Of these, 32,88,14,738 (32.88 crore) are women and 43,46,83,779 (43.46 crore) are men. While the nation's total literacy rate is 72.9%, the gender disparity at the national level is 16.25 percentage points, with males having a literacy rate of 80.89% and females having a rate of 64.64%.

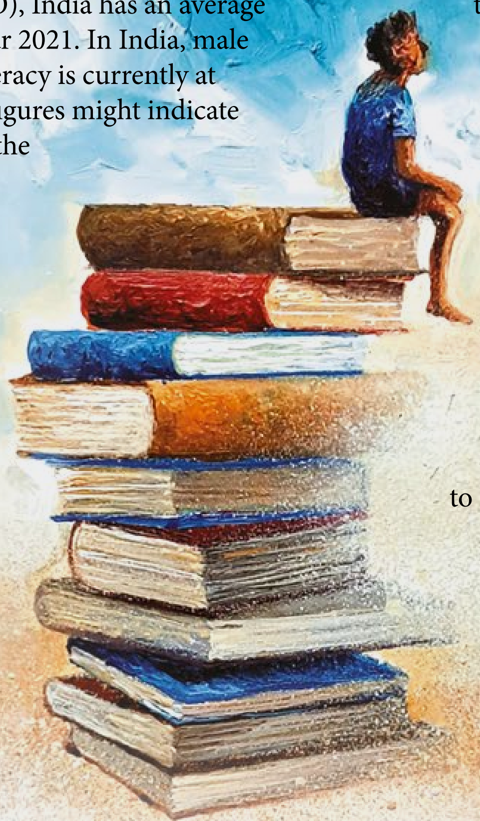

The United Nations points out that owing to schools closing during the Covid-19 pandemic, it is projected that 147 million children have missed more than half of their in-class teaching over the past two years. Children in this generation could collectively miss out on a total of $17 trillion in the present value of lifetime earnings. The percentage of adolescents who finished upper secondary school climbed from 54% in 2015 to 58% in 2020; however, progress slowed from the five years prior to 2015. Data from 73 nations, the majority of which fall into the low- and middle-income range, show that between 2013 and 2021, around seven out of 10 children between the ages of 3 and 4 will be developmentally on track.

In the years leading up to the Covid-19 pandemic, the participation rate in structured preschool education progressively increased. Most nations, however, still lack gender parity in the percentage of kids who satisfy the minimal reading competency levels and are in the lower secondary completion rate. Only 20% of nations made considerable efforts to offer more mental health and psychosocial support to students following the start of classes. Globally, over a quarter of elementary schools lacked access to essential amenities like power, clean drinking water, and simple sanitization facilities in 2020. About 33 million primary school instructors, 12 million pre-primary schoolteachers, 38 million secondary schoolteachers and 83% of primary schoolteachers worldwide were employed in classrooms in 2020. As of today, 244 million children and youth lack access to education, and 771 million adults are illiterate. The education sector worldwide still has a lot to accomplish.

Shifts in global politics have further hindered access to basic education all over the world. Afghan Taliban guards were armed when eager female students arrived for class on March 23, the opening day of the new school year. Even though the *de facto* authorities had promised just a few days earlier that they would allow girls to continue their education through the sixth grade, they actually forbade them from doing so. There are also other factors that prevent children from gaining access to education. In some areas of the country, there are no schools and inadequate transportation. Children who live far away from their schools face many difficulties. Children who must walk long distances to go to school are less likely to attend

class. Rough terrain, particularly in hilly areas, make it difficult for kids to get to school. The few that succeed in overcoming all these odds receive compromised levels of education as only 48% of their teachers possess the required academic credentials.

Afghanistan's current sociopolitical and humanitarian problems continue to have a significantly negative impact on a fragile educational system. Moreover, education for children suffers more owing to natural disasters like landslides, earthquakes and floods. These factors make parents anxious about the security of their kids and make them hesitant in sending them to school.

In 2018, the United Nations General Assembly adopted a resolution marking January 24 as the International Day of Education. This was to recognize the importance of education in promoting peace and development. The occasion recognises the fact that if schools and lifelong learning opportunities are not universal and inclusive, countries will not be able to achieve gender equality or break the poverty cycle.

> "In India, illiteracy and the lack of access to educational facilities have remained the biggest factors responsible for the slow growth of the country. According to data from the National Statistical Office (NSO), India has an average literacy rate of 77.70% as of the year 2021. In India, male literacy is at 84.70% and female literacy is currently at 70.30% as of 2021. And while the figures might indicate that literacy levels have increased, the reality is quite different. According to the 2011 Census, there are 76,34,98,517 (76.34 crore) literate people in the nation. Of these, 32,88,14,738 (32.88 crore) are women and 43,46,83,779 (43.46 crore) are men. While the nation's total literacy rate is 72.9%, the gender disparity at the national level is 16.25 percentage points, with males having a literacy rate of 80.89% and females having a rate of 64.64%"

Audrey Azoulay, Director-General of UNESCO, pointed out that UNESCO has dedicated the fifth edition of the International Day of Education to all the girls and women in Afghanistan "who have been denied their right to learn, study and teach" while condemning "this serious attack on human dignity and on the fundamental right to education." Thus, this International Day of Education was a clarion call to one and all to stand in solidarity with the UN's vision of making education an achievable reality for one and all. **Prabha Khaitan Foundation** believes in this vision, and continues to work towards making our society enlightened, inclusive and progressive.

ARTWORK BY **SUDIPTA KUNDU**

IN OUR NEXT ISSUE

Amar Mitra

Chintan Pandya

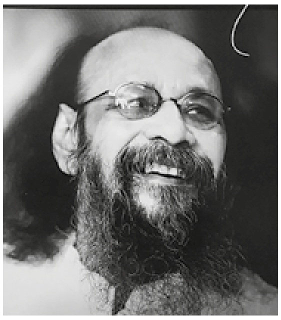
Joy Goswami

Karen Anand

Nandana Dev Sen

Pramod Sawant

Prem Prakash

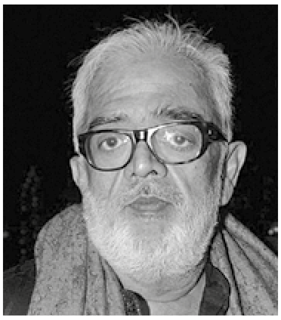
Rahul Rawail

Rahul Singh

Sadaf Hussain

Shiv Aroor